जनजागरण
वनवासियों में आत्म-परिष्कार और समाज के उत्थान की उमंग 5

रूस में गायत्री यज्ञ
24 कुण्डीय यज्ञ के साथ जन्मशताब्दी जनजागरण समारोह 6

राष्ट्रीय संगोष्ठी
विश्व की समस्याओं का समाधान भारत से निकलेगा 8

शताब्दी वर्ष-2026

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

मध्य प्रदेश

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 अक्टूबर 2025

वर्ष : 38, अंक : 07
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 सितम्बर 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-11

दूसरों के साथ वह व्यवहार न करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।

व्यवहार में समानता : हर क्रिया की वैसी ही प्रतिक्रिया होती है। जैसा हम करते हैं, वैसा ही हमें फल भी मिलता है। अतः यदि हम चाहते हैं कि दूसरे लोग हमारे साथ सज्जनता का उदार और मधुर व्यवहार करें, जो हमारी प्रगति में सहायक हो तो हमें भी ऐसे कार्य नहीं करने चाहिए, जिससे औरों की प्रसन्नता और सुविधा में किसी प्रकार का विघ्न उत्पन्न हो। लेने और देने के दो बाट रखने में ही सारी गड़बड़ी पैदा होती है।

सिद्धांतों में एकरूपता हो : हमारी कन्या विवाह योग्य हो जाती है तो हम बिना दहेज के सज्जनोचित व्यवहार करते हुए विवाह संबंध स्वीकार करने वाले वर की तलाश करते हैं और दहेज माँगने वालों को कोसते हैं, पर जब अपना लड़का विवाह योग्य हो जाता है तो ठीक वैसी ही अनुदारता हम भी दिखाने लगते हैं। कोई हमसे चोरी, बेईमानी कर लेता है, या ठग लेता है तो हमें बुरा लगता है, फिर हम अपने कारोबार में वैसी ही नीति अपनाने में प्रसन्नता और गर्व का अनुभव क्यों करते हैं? ऐसी दुमुही नीति से मानव-समाज में सुख-शांति कैसे कायम रह सकेगी?

ईमानदारी और उदारता बरतें : हम उधार लेने वालों से आशा करते हैं कि आड़े वक्त में की गई सहायता को वह व्यक्ति कृतज्ञतापूर्वक याद रखेगा और समय पर लौटा देगा। यदि वह वापस देते वक्त आँखें बदलता है तो हमें कितना बुरा लगता है। इसी प्रकार की ईमानदारी, उदारता और कृतज्ञता का परिचय हमें स्वयं भी देना चाहिए।

शालीनता अपनाएँ : हमें दूसरों की कटुता, रुखाई, निष्ठुरता, उपेक्षा और अशिष्टता से दुःख होता है तो हमें भी सबके साथ नम्रता, शिष्टता, मधुरता और प्रेमभरा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार का स्वभाव बना लेना चाहिए।

माता-पिता की सेवा : यदि अपने बूढ़े माँ-बाप के प्रति हमारा व्यवहार बहुत ही उपेक्षापूर्ण रहता है तो फिर अपने बच्चों से हम यह आशा न रखें कि वे बुढ़ापे में हमारी सेवा करेंगे। हम चाहते हैं कि हमारी बहू-बेटियों की दूसरे लोग इज्जत करें, उन्हें अपनी बहिन-बेटी की निगाह से देखें, तो फिर हमें भी दूसरों की बहिन-बेटियों को दुष्टता भरी दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।

प्रकृति की पाठशाला : उदारता का लाभ उठाने वाले और स्वयं निष्ठुरता धारण करने वाले नर-पशुओं की इस दुनिया में कमी नहीं है। उदार और उपकारी पर ही घात चलाने वाले हर जगह भरे हैं। उनकी दुर्गति का शिकार न बनना पड़े, इतनी सावधानी तो रखनी चाहिए, किन्तु अपने कर्त्तव्य और सौजन्य को इसलिए नहीं छोड़ देना चाहिए कि उसके लिए सत्पात्र नहीं मिलते। हमें प्रकृति से सीखना चाहिए। बादल हर जगह वर्षा करते हैं, सूर्य और चंद्रमा हर जगह अपना प्रकाश फैलाते हैं, पृथ्वी हर किसी का भार उठाती है, फिर हमें ऐसी उदारता और महानता का परिचय क्यों नहीं देना चाहिए?

ध्यान रहे कि अनुदार और चालाक व्यक्तियों द्वारा उदार प्रकृति के लोगों को ठगा जाता हो, पर वे घाटे में नहीं रहते। उनकी सज्जनता से प्रभावित होकर लोग उनकी सहायता करते हैं, जबकि स्वार्थी एवं अनुदार, चालाक व्यक्तियों को कोई सहारा नहीं देता। ऐसा व्यवहार कभी किसी के लिए उन्नति और प्रसन्नता का कारण नहीं बन सकता।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महासम्मेलन

'कृत्रिम बुद्धिमत्ता : आस्था और भविष्य' विषय पर विचार मंथन

महासम्मेलन के मंच पर माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री माननीय श्री पुष्करसिंह जी एवं अन्य गणमान्य

दो नोबेल पुरस्कार विजेता विद्वानों सहित बीस देशों के प्रतिनिधियों ने विचार साझा किये

16 सितंबर 2025 के दिन देवभूमि उत्तराखंड स्थित देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार एक ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बना जब देश-विदेश के विशेषज्ञों, दो नोबेल पुरस्कार विजेताओं और बीस देशों के प्रतिनिधियों ने एक मंच पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के वर्तमान और भविष्य पर अपने विचार साझा किए। इस अंतरराष्ट्रीय महासम्मेलन में विज्ञान और अध्यात्म के संगम की अद्वितीय झलक दिखाई दी।

इस महाआयोजन का शुभारंभ विशिष्ट अतिथि लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी, देसंविवि के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और अन्य गणमान्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया। यह आयोजन न केवल एआई के तकनीकी पहलुओं को लेकर विचार-विमर्श का मंच बना, बल्कि यह भी स्पष्ट कर गया कि भारतीय दर्शन, संस्कृति और अध्यात्म के साथ समन्वित एआई मानवता के भविष्य को एक नई दिशा दे सकता है।

विद्वानों-विशेषज्ञों की भागीदारी

इस महासम्मेलन में स्विट्ज़रलैंड के इंटर-पार्लियामेंटरी यूनियन के सेक्रेटरी जनरल श्री मार्टिन चुंगोंग ने वीडियो संदेश के माध्यम से एआई की वैश्विक भूमिका पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही भारत सरकार के एआई मिशन के सी.ई.ओ. डॉ. अभिषेक सिंह, प्रख्यात विशेषज्ञ रॉबर्ट ट्रैगर, स्टुअर्ट रसेल, जॉन टैलिन, डॉ. सचिन चतुर्वेदी (कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय) सहित 20 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों ने इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

अतिथियों का सम्मान

कार्यक्रम के समापन अवसर पर सभी अतिथियों को डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने गायत्री महामंत्र की चादर, देसंविवि का प्रतीक चिह्न और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

एआई को आध्यात्मिक दिशा मिले

श्री ओम बिरला जी

''आधुनिक युग में एआई की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आज इसका उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, रक्षा और अनेक क्षेत्रों में हो रहा है। लेकिन एआई के विकास की दिशा आध्यात्मिक मूल्यों और भारतीय संस्कृति के साथ समन्वित होनी चाहिए। विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय ही भारत की विशेषता है और देव संस्कृति विश्वविद्यालय इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।''- **श्री ओम बिरला जी, लोकसभा अध्यक्ष**

एआई केवल तकनीक नहीं, नैतिक उत्तरदायित्व भी है

श्री धामी जी

''कृत्रिम बुद्धिमत्ता महज तकनीकी उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक उत्तरदायित्व भी है। यदि हम एआई की शक्ति का उपयोग सही दिशा और उद्देश्य के साथ करें, तो यह करोड़ों लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है।'' - **श्री पुष्कर सिंह धामी, मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड**

भस्मासुर न बन जाए एआई

डॉ. चिन्मय जी

''एआई अब केवल तकनीकी क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, चिकित्सा, उद्योग, सुरक्षा सहित अनेक क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है, परन्तु इसके साथ ही नैतिकता, डेटा सुरक्षा, गोपनीयता और रोजगार से जुड़ी अनेक चिंताएँ भी सामने आ रही हैं। हमें सावधान रहना होगा कि कहीं एआई भस्मासुर न बन जाए। इसके लिए युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के विचार ही समाधान हैं।''

- डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रति कुलपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं संयुक्त राष्ट्र के 'आस्था एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आयोग' के एशिया क्षेत्र के कमिश्नर

एआई को मानवता के कल्याण का माध्यम बनायें

- ले.ज. श्री गुरमीत सिंह जी (से.नि.), माननीय राज्यपाल, उत्तराखण्ड

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'एआई : फेथ एण्ड फ्यूचर' के समापन समारोह के मुख्य अतिथि माननीय राज्यपाल ले.ज. श्री गुरमीत सिंह जी (से.नि.) थे। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में विज्ञान और अध्यात्म का संतुलन सदैव से रहा है। अब समय आ गया है कि हम एआई को केवल तकनीकी दृष्टि से न देखकर, इसे आध्यात्मिक मूल्यों के साथ जोड़ें और मानव कल्याण हेतु प्रयोग करें। यदि एआई का सही दिशा में उपयोग किया जाये तो यह मानवता के कल्याण का सशक्त माध्यम बन सकता है।

अच्छा होना ही पर्याप्त नहीं है, अच्छाई और भलाई दिखनी भी चाहिए

आवश्यकता अवांछनीयताओं के विरुद्ध सच्चिंतन, सद्विचार और श्रेष्ठ परम्पराओं की सेना खड़ी करने की है

पर्वों की प्रगतिशील प्रेरणाएँ

रावण के आतंक का अंत और रामराज्य की स्थापना त्रेता युग की बात है, फिर भी आज तक हर वर्ष दशहरा और दीपावली पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं। इन पर्वों के माध्यम से बुराई पर अच्छाई की विजय के लिए किए गए उस पराक्रम को और भगवान श्रीराम के जीवन-आदर्शों को बार-बार याद किया जाता है। इसी प्रकार मानवीय जीवन की उत्कृष्टता का पाठ पढ़ाने वाले पर्व-त्यौहारों को मनाने की प्रेरणादायी पावन परंपरा भारतीय संस्कृति और जीवन दर्शन का अभिन्न अंग है। पर्व-त्यौहारों की ये परंपराएँ बताती हैं कि अच्छाई और भलाई का होना ही पर्याप्त नहीं है, उनका होते हुए दिखना भी आवश्यक है, उन घटनाओं का बार-बार स्मरण करना भी आवश्यक है, ताकि वे घटनाएँ प्रकाश स्तंभ की भाँति समाज को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करती रहें।

बात वर्तमान युग की

आज का युग मीडिया का युग है। समाज के तथाकथित समझदारों की समझदारी देखिये कि इन दिनों पर्व-त्यौहारों, संस्कार समारोहों का प्रचलन तो बेतहाशा बढ़ता चला जा रहा है, लेकिन दुर्भाग्य से मानवीय चिंतन, चरित्र और व्यवहार पर मीडिया का दुष्प्रभाव हावी होता जा रहा है। पर्व-त्यौहारों के माध्यम से समाज में श्रेष्ठ विचारों और शुभ संस्कारों का विस्तार होना चाहिए था, वह कहाँ हो पा रहा है? कभी विवाहों में दहेज-दिखावे को कुप्रथा माना जाता था। आज इन विवाहों में लाखों नहीं, करोड़ों और अरबों रुपये फूँके जा रहे हैं। छोटे-छोटे शिक्षाप्रद संस्कार समारोह अब शान के प्रतीक (स्टेटस सिंबल) बनते जा रहे हैं। जन्मदिन, विवाहदिन से लेकर हर छोटे-बड़े संस्कार अत्यंत प्रेरणादायी विधि-विधान के साथ बड़ी सादगी के साथ सम्पन्न हो जाया करते थे, लेकिन अब संस्कार नदारद हैं, केवल दिखावा रह गया है, जिस पर बेतहाशा खर्च किया जा रहा है। अब संत-महात्माओं की वाणी का प्रभाव दिखाई नहीं देता, सिनेमा और टेलीविजन में दिखाई देने वाले नए-नए प्रयोगों का धड़ल्ले के साथ अंधानुकरण हो रहा है।

यह फिजूलखर्ची समाज को पतन की राह पर ले जा रही है। जीवन की आवश्यकताएँ अत्यंत स्वल्प हैं, लेकिन आधुनिकता की होड़ में विकसित होती जा रही सामाजिक परम्पराओं ने आवश्यकताएँ इतनी अधिक बढ़ा दी हैं कि सामान्य व्यक्ति द्वारा परिश्रम और ईमानदारी के साथ इन्हें पूरा कर पाना कठिन प्रतीत होता है। ये बढ़ी हुई महत्त्वाकांक्षाएँ ही चोरी, बेईमानी, मुनाफाखोरी, भ्रष्टाचार जैसी अवांछनीयताओं को जन्म देकर समाज को दूषित कर रही हैं।

चेतें, सँभलें और दिशाधारा बदलें

परम पूज्य गुरुदेव ने बार-बार निर्देश दिये हैं कि धन-संसाधनों पर व्यक्तिगत अधिकार जताने की अपेक्षा उन्हें सामाजिक सम्पत्ति माना जाना चाहिए। सामाजिक सम्पत्ति का दुरुपयोग नहीं, मितव्ययिता और विवेक के साथ सदुपयोग किया जाना चाहिए। पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि अगले दिनों आध्यात्मिक साम्यवाद का युग होगा। धन-साधनों पर किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं रहेगा। अच्छा हो कि हम समय पर चेत जायें, परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व दें। अनीति और पापाचार की राह छोड़कर आत्मग्लानि और दण्ड व्यवस्था का दंश झेलने से बचें। भटके हुए समाज का अंधानुकरण करते हुए मानव जीवन पाने के दुर्लभ सौभाग्य को व्यर्थ ही गँवा देने की अपेक्षा जीवन की वह रीति-नीति अपनाएँ, जिसमें हमें सच्चे सुख एवं आनन्द की प्राप्ति हो तथा समस्त समाज का भी कल्याण हो।

सद्बुद्धिदात्री गायत्री उपासना-साधना साधकों को सहज भाव से आदर्शोन्मुख जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है, लेकिन वर्तमान युग में मीडिया के प्रभाव से बचना आसान नहीं है। आजकल समाज में बदलती सामाजिक परंपराओं का दबाव इतना अधिक हो गया है कि लोग उस ढर्रे से निकलने और अपने जीवन से आदर्श प्रस्तुत करने का साहस बटोर ही नहीं पाते। थोड़े-बहुत जो प्रयास होते भी हैं, वे उपेक्षा के गर्त में चले जाते हैं।

गिरना सरल है, उठना कठिन। पानी सहज रूप में ढलान की ओर बहता चला जाता है, लेकिन उसे ऊपर उठाना हो तो शक्तिशाली पंप की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार वर्तमान युग में समाज के पतनोन्मुख प्रचण्ड प्रवाह को रोकने और सत्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करने के लिए शक्तिशाली प्रयासों की आवश्यकता है।

सामान्यतया कहा यही जाता है कि नेकी कर, दरिया में डाल। अच्छे काम करो, लेकिन उनका गुणगान न करो। अपने व्यक्तित्व में अहंकार की भावना को पनपने न देने की दृष्टि से यह उचित भी है, लेकिन बात जब सामाजिक उत्कर्ष की हो तो सत्प्रवृत्तियों का गुणगान और श्रेष्ठताओं का प्रदर्शन अत्यावश्यक हो जाता है, जैसे कि हमारे पर्व-त्यौहारों की परम्परा के माध्यम से प्रेरणा दी जाती है। दीप से दीप जलते हैं, सत्कर्मों की सुगंध से औरों में भी इस मार्ग पर चल पड़ने का साहस उभरता है। इसीलिए परम पूज्य गुरुदेव ने युग निर्माण सत्संकल्पों में लिखा है कि ''संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए हम अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।''

मीडिया का सृजनात्मक उपयोग हो

इस युग का देवासुर संग्राम अनेक मोर्चों पर लड़ा जा रहा है। धार्मिक उन्माद, राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाएँ, धन-साधनों का दंभ, वैज्ञानिक उपलब्धियों का दुरुपयोग जैसे अनेक मोर्चे हैं, जिन पर असुरता अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहती है। देवासुर संग्राम का सबसे बड़ा क्षेत्र मीडिया है, जिसका प्रभाव गरीब से गरीब और अमीर से अमीर हर व्यक्ति पर दिखाई देता है। समय की माँग है कि मानवीय चिंतन, चरित्र में उत्कृष्टता के अभिवर्धन के लिए इसका सकारात्मक और सृजनात्मक उपयोग किया जाये।

आज समाज में नशा, फैशनपरस्ती, धर्मान्धता, जातिवाद, मुनाफाखोरी जैसी कुरीतियों के विरुद्ध सशक्त वातावरण विकसित करने की आवश्यकता है। अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर पतनोन्मुख प्रेरणाएँ तो धड़ल्ले से परोसी जा रही हैं, दृश्य, श्रव्य और प्रिंट मीडिया मार-काट, हत्या, लूटपाट, व्यभिचार, अश्लीलता के समाचारों से भरा पड़ा है। इंटरनेट से तरह-तरह के खेल, धारावाहिक, फिल्मों एवं सोशल मीडिया पर रीलों के माध्यम से नन्हें बच्चों सहित समाज को भरमाया या भटकाया जा रहा है। ऐसे में देवत्व को जगाने और उभारने हेतु मीडिया को अधिकाधिक प्रेरणादायी बनाने की आवश्यकता है।

हमारे उत्तरदायित्व

हम सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार में उदासीनता न बरतें। अच्छाई को प्रोत्साहित करेंगे तो अच्छाई बढ़ती जायेगी और बुराई ही गाते रहेंगे तो व्यक्ति और समाज कभी ऊँचे नहीं उठेंगे। अतः सेवा, संवेदना, परमार्थपरायणता की छोटी-छोटी घटनाओं का भी गुणमान किया जाना चाहिए। जो लोग बुराइयाँ छोड़ते हैं, अच्छाइयाँ अपनाते हैं, उनकी पीठ थपथपाई जानी चाहिए। सादगी और सेवाकार्यों में प्रवृत्त होने वाले और प्रचलित प्रवाह को चीर कर आदर्शवादी परम्पराओं का अवलम्बन करने वालों का समाज में सम्मान होना चाहिए। इन कार्यों के लिए मीडिया का सकारात्मक और सृजनात्मक उपयोग किया जाना चाहिए।

संगठनात्मक जिम्मेदारियाँ

अपने मिशन का लगभग 100 वर्षों का बड़ा वैभवशाली इतिहास है। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की पावन स्मृतियाँ, समाज में हुए व्यापक परिवर्तन, करोड़ों लोगों के अनुभव, अपने परिजनों का तप-त्याग जैसे अनेक विषय हैं, जिनकी गाथाएँ लोगों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करती हैं। गायत्री परिवार की प्रांत, जिला एवं अन्य इकाइयाँ इनके संकलन और प्रकाशन की जिम्मेदारियों को अनुभव करें और उसके लिए एक व्यवस्थित तंत्र विकसित करें। अपने मिशन में नशामुक्ति, वृक्षारोपण, बाल संस्कारशालाएँ, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी जैसे अनेक आन्दोलन चल रहे हैं। इसी क्रम में वैचारिक क्रांति के लिए **मीडिया के सदुपयोग को भी एक बड़ा अभियान बनाने की आवश्यकता है।**

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज में 17 से 19 अक्टूबर 2025 की तिथियों में एक राष्ट्रीय सम्मेलन **'राष्ट्र निर्माण में मीडिया की भूमिका'** आयोजित हो रहा है। देश के प्रसिद्ध मीडियाकर्मियों और पूरे देश में मीडिया से जुड़े गायत्री परिवार के परिजनों के बीच विचार मंथन होगा। इससे मिशन को नई ऊँचाइयों पर प्रतिष्ठित करने वाला उत्कृष्ट मार्गदर्शन मिलेगा।

युग के नवनिर्माण में पाक्षिक प्रज्ञा अभियान की भूमिका

परम पूज्य गुरुदेव का कथन है, *''लोगों को सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने के लिए प्रेरित करना हो तो 100 प्रेरणाप्रद व्याख्यानों से अधिक प्रभावशाली होता है एक अच्छा समाचार।''* वे चाहते थे कि समाज की दिशाधारा को बदलने के लिए सकारात्मक, सृजनात्मक और राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत विचारों तथा समाचारों वाले समाचार पत्र हर प्रांत में, हर जिले में प्रकाशित होने लगें।

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान उनके इस स्वप्न को साकार करने में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। परिजनों के प्रयासों से अब इसके प्रांतीय संस्करण भी आरंभ हो गए हैं। **पाक्षिक प्रज्ञा अभियान अब जन-जन का अभियान बन चुका है।** अखण्ड दीप और परम वंदनीया माताजी के जन्म के शताब्दी वर्ष में हर क्षेत्र में, हर जिले में सैकड़ों-हजारों की संख्या में और प्रज्ञा मण्डलों के स्तर पर न्यूनतम 25 प्रज्ञा अभियान घर-घर पहुँचाने का एक सशक्त अभियान चल रहा है।

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान का लक्ष्य है समाज में उभरती सत्प्रवृत्तियों को प्रकाशित कर लोगों के समक्ष सामाजिक सक्रियता का आदर्श प्रस्तुत करना। **पाठक, परिजनों से अनुरोध है कि वे उपयुक्त समाचार भेजकर इसे अधिक से अधिक उद्देश्यपूर्ण एवं प्रभावशाली बनाने में सहयोग प्रदान करें। नवसृजन चेतना का यह संदेश हर घर तक पहुँचे, यह सुनिश्चित करें। पाठकों की प्रतिक्रियाएँ और सुझाव भी सादर आमंत्रित हैं।**

निवेदक -संपादक मण्डल

देव परिवार निर्माण आन्दोलन

आत्मगौरव बोध के प्रगतिशील प्रयोग, प्रेरक परम्पराएँ

परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में इन दिनों शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के मार्गदर्शन में **देव परिवार निर्माण का एक विशेष आन्दोलन आरंभ हुआ है।** उत्तर प्रदेश के प्रांतीय संगठन ने एक करोड़ परिवारों को इस अभियान से जोड़ने का संकल्प लिया है। अगस्त माह में जयपुर स्थित वेदना निवारण केन्द्र, मानसरोवर में नारी सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें आने वाले पाँच वर्षों में जयपुर नगर के दो लाख परिवारों को देव परिवार निर्माण के विराट आन्दोलन से जोड़ने के संकल्प उभरे। अन्य क्षेत्रों में भी लोगों को इस अभियान से जोड़ा जा रहा है। इसके अलावा पूरे देश में गायत्री परिवार के करोड़ों सदस्य हैं।

जो परिवार इस आन्दोलन से जुड़ रहे हैं, उनके साथ आदर्श परंपराओं को अपनाने के कुछ न्यूनतम मानक निर्धारित हैं, जैसे-घर में देवस्थापना, धर्मघट/ज्ञानघट, युग साहित्य, तुलसी चौरे की स्थापना; प्रतिदिन भावभरी उपासना, बलिवैश्व देव यज्ञ, सत्साहित्य पाठ, घर को व्यसनमुक्त बनाना, पत्रिकाओं की सदस्यता आदि। घर-घर संपर्क कर लोगों को इस अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित किया जा रहा है और संकल्प पत्र भरवाये जा रहे हैं। (विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क कीजिए व्हॉट्सएप : 9258360962)

आदर्शों का अवलम्बन और श्रेष्ठता का वरण आसान नहीं होता। जो इन्हें अपना रहे हैं या अपनाने का संकल्प ले रहे हैं, उन्हें इसका गौरव बोध होना चाहिए और वह दिखाई भी देना चाहिए, ताकि समाज में एक ऐसा वातावरण तैयार हो, जो स्वयं के संकल्पों को बल दे और दूसरों को भी इस अभियान से जुड़ने की प्रेरणा देता रहे।

आदर्श देव परिवार अभियान से जुड़ने के प्रतीक के रूप में समाज में कुछ प्रगतिशील परंपराएँ आरंभ हो रही हैं, जो प्रेरणादायी और उत्साहवर्धक हैं, जैसे-

- द्वार पर 'नेम प्लेट' लगाना, जिसमें 'गायत्री परिवार, देव परिवार-व्यसनमुक्त परिवार' ॐ भूर्भुवः स्वः, हम बदलेंगे-युग बदलेगा' जैसे गायत्री परिवार की विशिष्ट पहचान वाले वाक्यों का उल्लेख होता है।
- गुण या देव नामों के आधार पर वास्तु संस्कार के साथ अपने घर का नामकरण करना और द्वार पर उसका उल्लेख, जैसे 'शान्ति सदन', 'गायत्री भवन' आदि। ऐसे 900 नामों की सूची शान्तिकुञ्ज के युवा प्रकोष्ठ से प्राप्त की जा सकती है।
- घर की छतों पर मशालयुक्त धर्म ध्वजारोहण।

आशा की जाती है कि परिजन उत्कृष्टता के प्रदर्शन की आवश्यकता को अनुभव करेंगे और इन परम्पराओं को अपनाकर देव परिवार निर्माण के अभियान को बल देंगे।

देव परिवार निर्माण संबंधी सामग्री एवं विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए संलग्न बार कोड स्कैन कीजिए।

एक युद्ध, नशे के विरुद्ध

शराबबंदी के लिए सशक्त आन्दोलन

कसरावद, खरगोन। मध्य प्रदेश

इन दिनों कसरावद तहसील के ग्राम बामखल में ग्रामीणों और गायत्री परिजनों की सक्रियता से अवैध शराब के खिलाफ व्यापक जन आंदोलन उठ खड़ा हुआ है। इसी के अंतर्गत 31 अगस्त को बामखल की मिडिल स्कूल मैदान में विशाल जन जागरण रैली का आयोजन हुआ। रैली में बामखल सहित गौल, रायपुरा, सोनखेड़ी, मुकुंदपुरा, मथड़ाय, रामपुरा, बोरगाँव, भुलगाँव, सिपटान, बरसलाय आदि ग्रामों से हजारों की संख्या में महिला, पुरुष, स्कूल के विद्यार्थी, युवाओं सहित वरिष्ठ जन एवं गायत्री परिजन एकत्रित हुए।

यादव बहुल ग्राम बामखल के आसपास के गाँवों में चल रहे शराब विरोधी आन्दोलन में गाँव के जागरूक पत्रकार जितेन्द्र यादव और उनके युवा साथियों ने अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए जन जागरण का फैसला किया। तत्पश्चात् उन्होंने दो-तीन माह तक आसपास के 12-15 गाँवों में बैठकें लेकर शराब के विरुद्ध जन जाग्रति की। इन गाँवों में बनी आम सहमति के बाद बामखल में 31 अगस्त को विशाल नशा विरोधी रैली का आयोजन किया गया।

शराब का सामाजिक बहिष्कार हो

रैली के अंत में एक जनसभा हुई। इसमें गाँव की महिलाओं ने शराब बंदी की माँग प्रमुखता से उठाई। गायत्री परिवार कसरावद के प्रखर वक्ता रामलाल पटेल ने शादी, पार्टी हो या चुनाव, सभी में शराब का सामाजिक बहिष्कार करने का आह्वान किया।

गायत्री परिवार के नेतृत्व में ग्राम बामखल में निकाली गई नशामुक्ति जनजागरण यात्रा

नारी की पीड़ा पुरुष समझें

गायत्री परिवार की सोना कुशवाह ने कहा कि नारी परिवार और समाज की रीढ़ है। यदि नारी ठान ले तो परिवार और समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है। बेटों, पति और भाई के लिए नारियाँ भूखी-प्यासी रहकर व्रत करती हैं। नारी के इस त्याग को पुरुष भी समझें और नशे से दूर रहें।

क्षेत्र में आक्रोश क्यों?

ज्ञातव्य है कि पिछले 5 वर्षों में ग्राम बामखल तथा आसपास के गाँवों में शराब के चलते 13 से अधिक युवा असमय काल के गाल में समा गए। रैली के दिन भी एक युवा की मौत शराब पीने के कारण ही हुई। इससे ग्रामीणों में काफी गुस्सा है।

सफल जन आन्दोलन की गौरव गाथा

गायत्री परिवार के युवा तहसील संयोजक मनोज यादव ने गायत्री परिवार द्वारा सन् 2012 में कसरावद क्षेत्र में खुलने जा रही शराब फैक्ट्रियों के विरुद्ध गायत्री परिवार द्वारा चलाए गए सफल जन आंदोलन की जानकारी देकर क्षेत्र के युवाओं में पुनः जोश भरा। उन्होंने कहा कि युग निर्माण जिला खरगोन शराब बंदी के लिए पूरे देश में प्रेरक जिला माना जाता है। नौ माह तक चले इस जन आंदोलन के परिणामस्वरूप तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को स्वयं कसरावद आकर एक जन सभा में प्रस्तावित शराब फैक्ट्रियों को बंद करने की घोषणा करनी पड़ी थी।

मनोज यादव ने कहा कि हमारे शराब फैक्ट्री विरोधी आंदोलन की सफलता से बामखल सहित आसपास के 12-15 गाँवों में नशे के विरुद्ध जबरदस्त जागरूकता आई है। इस रैली से केवल आगाज हुआ है। सभी गाँवों में पूर्ण शराब बंदी तक लड़ाई बदस्तूर जारी रहेगी।

नशामुक्ति का संकल्प दिलाया

सभा के समापन पर बामखल की नवयुवतियों ने शराब रूपी सामाजिक बुराई से दूर रहने के लिए सभी को नशामुक्ति का संकल्प दिलाया।

प्रकृति के पोषण के लिए वृक्षारोपण

20 विद्यालयों में किया पौधारोपण

बनबसा, चम्पावत। उत्तराखण्ड

गायत्री शक्तिपीठ बनबसा ने पवित्र श्रावण मास में एक मासीय वृक्षारोपण अभियान चलाया। इस अभियान के अंतर्गत जनपद के लगभग बीस विद्यालयों में वृक्षारोपण किया गया, जिनमें विद्यालयों के शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं गायत्री परिजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसी बीच पंच कुण्डीय गायत्री यज्ञों की श्रृंखला चलाई गई और अनेकों रचनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, जिसमें सभी परिजनों एवं क्षेत्रीय नागरिकों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

गायत्री शक्तिपीठ बनबसा में पवित्र श्रावण मास में लगभग 22 रुद्राभिषेक सम्पन्न किए गए। इन आयोजनों में आम नागरिकों सहित बड़ी संख्या में गणमान्य अतिथियों ने भी भाग लिया।

बनबसा

वार्षिक ट्री प्लांटेशन ड्राइव-2025

गोंदिया। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप गोंदिया की ओर से वार्षिक ट्री प्लांटेशन ड्राइव-2025 का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत प्रकृति माता के पोषण तथा समाजसेवा से आत्मोत्थान की प्रेरणा के साथ खड़की डोंगरगांव, तिरोरा तालुका, गोंदिया जिले में पीपल, बरगद, अशोक, बेल, आँवला, नीम इत्यादि के सैकड़ों वृक्ष लगाए। पौधारोपण के पश्चात् सभी पौधों को ट्री-गार्ड और जाल लगा कर सुरक्षित किया गया। इस कार्य में भागीदारी हेतु उकड़ा भाऊ परधी, अजय बोपचे, नितिन पटले, डॉ. विक्रम कात्रे इत्यादि की मुख्य भूमिका रही।

जीपीवायजी गोंदिया के युवा वृक्षारोपण करते हुए

बाढ़ पीड़ितों की सहायता

पीड़ित परिवारों को राहत सामग्री के पैकेट प्रदान करते गायत्री परिवार के परिजन

कोंडागाँव, रायपुर। छत्तीसगढ़

दिनांक 26 अगस्त को बस्तर क्षेत्र में आई भयंकर बारिश और बाढ़ के कारण बस्तर का दंतेवाड़ा क्षेत्र बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हुआ। ऐसे में बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए गायत्री परिवार आगे आया। गायत्री शक्तिपीठ, कोंडागाँव ने 100 कम्बल, आटा, दाल, तेल, मसाले, पोहा, चावल, बिस्किट, चाय पत्ती, फल, मोमबत्ती, वस्त्र इत्यादि जीवन उपयोगी सामग्री पीड़ितों तक पहुँचाई। इस कार्य में मुख्य प्रबंध ट्रस्टी जयश्री श्रीवास्तव, सहायक ट्रस्टी निलेश ठाकुर, प्रेम नारायण माथुर, सुभद्रा सिंह, शारदा पटेल, नित्यानंद यादव, राम अवतार कौशिक, पीलू राम कश्यप एवं अनेक परिजनों की सेवाएँ प्राप्त हुईं।

यज्ञ का अनुयाज : पंचायत भवन परिसर में 60 पौधों का रोपण किया

हटा, दमोह। मध्य प्रदेश

हटा के समीपवर्ती ग्राम देवरा जामशा में पंचायत भवन परिसर में 60 से अधिक अशोक, आम, अमरुद, ऐरेकापाम एवं कोनोकार्पस आदि के पौधों का रोपण किया गया। पौधों की सुरक्षा का सामूहिक संकल्प भी लिया गया।

जनपद पंचायत के सीईओ संजीव गोस्वामी ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम सभी ग्राम पंचायतों में होने चाहिए। जनपद अध्यक्ष गंगाराम पटेल, लक्ष्मण तिवारी, शिवचरण पटेल, बहादुर पटेल, गोपाल पटेल, कन्हैया लाल पटेल ने भी वृक्षारोपण की महत्ता पर अपने अपने विचार रखे।

कार्यक्रम की शुरूआत सामूहिक गायत्री चालीसा पाठ के द्वारा की गई। विशिष्ट अतिथियों ने विधिपूर्वक देवपूजन एवं पौधों का पंचोपचार पूजन किया। पंचायत इंस्पेक्टर राजेश पाराशर, महेश्वर सिंह, नरेंद्र चौकरया, नवनिर्वाचित जनपद सदस्य निशा पटेल आदि ने इस आयोजन की विशेष सराहना की। यज्ञ संयोजक नारायण सिंह पटेल ने बड़ी संख्या में पधारे ग्रामवासियों, क्षेत्रवासियों, जन प्रतिनिधियों एवं गायत्री परिजनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

> वृक्षारोपण का यह कार्यक्रम मई 2025 में आयोजित हुए 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के अनुयाज क्रम में आयोजित किया गया था।

नवयुग के प्रेरणादीप

हम बदलेंगे, युग बदलेगा का जीवंत आदर्श

शंकार शर्मा

गायत्री शक्तिपीठ समन्वय समिति के अध्यक्ष
सुन्दरबनी, जिला राजौरी, जम्मू-कश्मीर

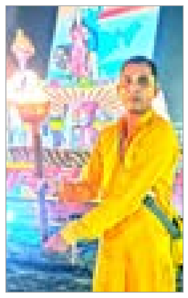

जम्मू-कश्मीर के सुंदरबनी में एक अत्यंत सामान्य से दुकानदार थे शंकार शर्मा। वर्ष 2009 में देव संस्कृति विश्वविद्यालय की एक इंटर्नशिप टीम उनके घर पर ठहरी। तब उनका परम पूज्य गुरुदेव के विचार और साहित्य तथा गायत्री परिवार की गतिविधियों से परिचय हुआ। तब से उनके मन में गुरुदेव, माताजी और गायत्री परिवार के प्रति ऐसा समर्पण भाव जगा कि जीवन ही बदल गया। उन्होंने, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधु बाला और पूरे परिवार ने 'मिशन प्रथम-पहले गुरु का काम, फिर अपना काम' को अपना जीवन मंत्र बना लिया। मात्र कुछ ही वर्षों में अपने क्षेत्र में गायत्री परिवार को बहुत ऊँचाई पर प्रतिष्ठित कर दिया है। गुरुकृपा से सुंदरबनी क्षेत्र में मात्र मिशन ही शिखर नहीं चूम रहा, शंकार जी की निजी प्रतिष्ठा, उनके प्रति लोगों की आस्था भी शिखर पर है। व्यापारिक दृष्टि से भी उन्होंने असाधारण प्रगति कर ली है। श्री शंकार शर्मा जी का जीवन 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा' का जीवंत उदाहरण है। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव की लाल मशाल थामी तो पूरे क्षेत्र में, आसपास के कई गाँवों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो गया।

दीक्षा : श्री शंकार शर्मा जी सन् 2009 में पूज्य गुरुदेव के विचारों से प्रभावित होने के बाद सबसे पहले सपत्नीक शान्तिकुञ्ज आए, गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली और फिर नियमित उपासना, साधना, आराधना का क्रम अपनाकर अपने जीवन को गायत्रीमय बना लिया। उसके बाद उन्होंने अनगिनत परिजनों को भी शान्तिकुञ्ज दर्शन व मंत्रदीक्षा के लिए प्रेरित किया।

शक्तिपीठ निर्माण : सन् 2014 में सुंदरबनी पार्क में पहली बार 24 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन कर उन्होंने समाज में नव जागरण का शंखनाद किया। उसके बाद उन्होंने अपनी प्रेरणा और प्रभाव से लोहार कोर्ट की भूमि मिशन को दान में दिला कर कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से उस पर गायत्री शक्तिपीठ सुंदरबनी का निर्माण कराया।

शाश्वत है गुरुदेव का आश्वासन

परम पूज्य गुरुदेव कहा करते थे, "तुम मेरा काम करो, मैं तुम्हारा काम करूँगा।" उनकी यह उक्ति श्री शंकार शर्मा जी के जीवन में चरितार्थ होती दिखाई देती है। वे और उनकी पत्नी श्रीमती मधु बाला, दोनों ही मिशन के कार्यों में पूरे समर्पित भाव से जुटे रहते हैं। वे उपासना, साधना और मिशन के कार्यों में समय देने में कोई कमी नहीं रखते तो उनका व्यापार भी गुरुकृपा से खूब फल-फूल रहा है। उनके बेटे की शारीरिक अशक्तता आश्चर्यजनक रूप से दूर होती जा रही है।

जन्मशताब्दी का संकल्प 2400 बेटियों को जोड़ना

आज शंकार शर्मा जी सुंदरबनी क्षेत्र के प्रेरणा दीप बनकर असंख्य युवाओं और परिजनों को युग निर्माण की ओर अग्रसर कर रहे हैं। उनका संकल्प है कि 2026 तक 2400 बेटियों को मिशन से जोड़ा जाए।

युवा जागृति : वर्ष 2022 में श्रावस्ती, उत्तर प्रदेश में आयोजित प्रांतीय युवा चेतना शिविर में भाग लेने पहुँचे। वहाँ से प्रेरणा लेकर उन्होंने 2023 में अपने यहाँ तीन दिवसीय युवा चेतना जागरण सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें 1000 से अधिक युवाओं ने भाग लिया। उसके बाद से क्षेत्र में युवा क्रान्ति का नया अध्याय आरंभ हो गया। क्षेत्र में नशामुक्ति रैली, मशाल यात्रा, बाल संस्कार शालाएँ और युवा मंडलों के निर्माण जैसी गतिविधियों से समाज में सकारात्मकता बढ़ती गई, सृजनात्मक विचारों का तेजी से संचार होता गया।

बड़े लोकप्रिय हैं शक्तिपीठ पर चल रहे मौन साधना सत्र : सन् 2024 में आदरणीय चिन्मय भैया जी के मार्गदर्शन में गायत्री शक्तिपीठ सुंदरबनी को साधना केंद्र के रूप में विकसित किया गया। शक्तिपीठ पर मौन साधना सत्र व नवरात्रि साधना सत्रों का शुभारंभ हुआ। इन साधना सत्रों में भाग लेने के लिए दूर-दूर से परिजन आते हैं।

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान : इन दिनों सुन्दरबनी क्षेत्र में पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के माध्यम से मिशन का तेजी से विस्तार हो रहा है।

कृपया समय पर पाक्षिक प्रज्ञा अभियान की सदस्यता का नवीनीकरण करा लीजिए

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान युग चेतना विस्तार का अत्यंत क्रान्तिकारी माध्यम है। परिजन इसे घर-घर पहुँचा रहा है। यज्ञ, गोष्ठियों के आमंत्रण के साथ और विभिन्न कार्यक्रमों में सैकड़ों की संख्या में पाक्षिक की प्रतियाँ बाँटी जा रही हैं। पाक्षिक के समस्त सदस्यों/वितरकों से निवेदन है कि चूँकि अधिकांश लोगों की सदस्यता नवम्बर-दिसम्बर में समाप्त हो जाती है, अतः वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अभी से करा लें।

नोट: सदस्यता समाप्ति की तिथि पते वाले लेबल पर लिखी होती है।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9258369725 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

प्रांतीय युवा चिंतन शिविर, भोपाल से पूर्व मध्य प्रदेश में हुआ मंथन

3000 युवा और 500 वरिष्ठ जन शिविर में शामिल होंगे

आयोजक प्रतिभागियों जैसी मानसिकता से तैयारी करें। - शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

भोपाल। मध्य प्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ, भोपाल में मध्य प्रदेश जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जगदीश चंद्र कुल्मी एवं युवा प्रकोष्ठ के प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह की मुख्य उपस्थिति में संगठन से जुड़े प्रमुख प्रतिनिधियों की संगोष्ठी हुई। इसमें 27 से 29 अक्टूबर 2025 की तिथियों में केरवा डैम रोड, भोपाल में आयोजित होने वाले प्रांतीय युवा चिंतन शिविर की पूर्व तैयारी हेतु विचार विमर्श किया गया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह जी ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए आयोजन की सफलता पर अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया। उन्होंने आयोजकों को एक प्रतिभागी की तरह सोच कर रूपरेखा निर्धारित करने तथा शिविर में भाग लेने वाले हर प्रतिभागी को आयोजक की भाँति जागरूक और संकल्पबद्ध होने की प्रेरणा दी।

मध्य प्रदेश के प्रांतीय समन्वयक श्री राजेश पटेल ने गुरु अनुशासन को स्वीकारते हुए मिलजुलकर शिविर की सफलता की जिम्मेदारियाँ वहन करने का आह्वान किया।

युवा प्रकोष्ठ के प्रांतीय प्रभारी श्री विवेक चौधरी ने स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविंद, आदिगुरु शंकराचार्य जैसे कई उदाहरण देते हुए कहा कि विचारों का बीजारोपण युवावस्था में ही होता है। प्रतिभागी युवाओं के मन में नवसृजन की उमंग जाना इस शिविर का लक्ष्य है। उन्होंने बताया कि इस शिविर में वही युवा शामिल हो रहे हैं, जिन्हें पूर्व में उपजोन एवं जिला स्तर पर युवा प्रकोष्ठ द्वारा प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

मंचासीन जोन समन्वयक श्री राजेश पटेल, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जगदीश कुल्मी जी, श्री आशीष सिंह और प्रांतीय युवा समन्वयक श्री विवेक चौधरी

मध्य प्रदेश जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जगदीश चंद्र कुल्मी ने गायत्री परिवार को भावनाओं पर आधारित देव परिवार बताते हुए शिविर में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की आवास, भोजन, सुरक्षा आदि व्यवस्थाओं की ओर ध्यानाकर्षित किया।

मीडिया प्रभारी श्री रमेश नागर ने शिविर की जानकारी देते हुए बताया कि इस शिविर में 18 से 45 वर्ष के युवाओं सहित मध्य प्रदेश के प्रत्येक जिले से 3000 युवक-युवतियाँ एवं 500 सक्रिय वरिष्ठ पदाधिकारी सम्मिलत होंगे। अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में यह चिंतन शिविर सम्पन्न होगा। कार्यक्रम का संचालन प्रांतीय सहसमन्वयक प्रभाकांत तिवारी ने किया।

सुपर-100 टीम के गठन पर भी विचार-विमर्श हुआ

विदिशा। मध्य प्रदेश : गायत्री शक्तिपीठ विदिशा में 7 सितम्बर को जिला स्तरीय युवा उन्नयन कार्यशाला का आयोजन हुआ। प्रांतीय मीडिया प्रभारी श्री रमेश नागर, श्री धीरज मनी, पंकेश घोडकी, श्री राजू राम बिश्नोई, जिला समन्वयक श्री मुकेश तिवारी एवं जिला संयोजक श्री सौरभ गुप्ता ने विविध विषयों पर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। विभिन्न सत्रों में युवाओं तक गुरुदेव के विचार एवं गायत्री परिवार की कार्ययोजना पहुँचाने पर विस्तार से चर्चा हुई। युवा जोड़ो अभियान को गति देने एवं सुपर-100 टीम के गठन पर भी विचार-विमर्श हुआ।

सभी तहसीलों से आए युवाओं ने मिशन संबंधी कार्यकलापों को गति देने एवं अधिक से अधिक लोगों को इस अभियान से जोड़ने का संकल्प लिया। अधिक से अधिक लोगों तक मिशन के विचारों को पहुँचाने के लिए पाक्षिक प्रज्ञा अभियान पत्रिका को घर घर पहुँचाने पर सहमति हुई।

विदिशा की युवा उन्नयन कार्यशाला में पाक्षिक प्रज्ञा अभियान का वितरण और सदस्यता अभियान चलाने की प्रेरणा

500 परिजनों ने लिया समयदान का संकल्प

जन्म शताब्दी जनसंपर्क गोष्ठी

जुलवानिया, बडवानी। मध्य प्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ जुलवानिया में जन्मशताब्दी जनसंपर्क अभियान के अंतर्गत जिला स्तरीय कार्यकर्ता गोष्ठी का आयोजन हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री रुद्रगिरी गोस्वामी, श्री रामचंद्र गायकवाड ने इसे संबोधित करते हुए जन्मशताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की जानकारी दी, उसके लिए समयदान-अंशदान का आह्वान करते हुए संकल्प पत्र भरवाये।

इस गोष्ठी में उपजोन ओंकारेश्वर के समन्वयक श्री पन्नालाल बिरला एवं गायत्री धाम, सेंधवा के पंडित मेवालाल पाटीदार जी ने भी विचार रखे। जिला समन्वयक श्री महेन्द्र भावसार ने बताया की समयदान के क्रम में हमारे क्षेत्र से 500 परिजन एक माह के लिए जन्मशताब्दी आयोजनों के अवसर पर हरिद्वार में अपनी सेवा देने के लिए संकल्पित हैं।

गोष्ठी में जिला सहायक विक्रम जमरे, लक्ष्मण चौहान, मगन लाल डुडवे, व्यसन मुक्ति अभियान के रमेश पाटोदे, त्रिलोक सोनी, किशोर सस्ते, कन्हैयालाल दादा, गोपाल परिहार, भीकाजी, दसरथ मिस्त्री, गायत्री दसौंधी, महिला मंडल की सदस्य एवं सैकड़ों गायत्री परिजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रकाश नरगावे ने किया आभार प्रदर्शन ट्रस्टी मांगीलाल गुप्ता ने किया।

उपजोन स्तरीय युवा कार्यशालाएँ

ग्वालियर में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ म.प्र. के समन्वयक श्री विवेक चौधरी

ग्वालियर उपजोन

ग्वालियर। मध्य प्रदेश
गायत्री प्रज्ञापीठ कम्पू ग्वालियर पर उपजोन स्तरीय युवा उन्नयन कार्यशाला सम्पन्न हुई, जिसमें ग्वालियर, भिंड, मुरैना, दतिया और श्योपुर जिलों के परिजनों ने भाग लिया। युवा प्रकोष्ठ के प्रांतीय समन्वयक विवेक चौधरी, सह समन्वयक अमर धाकड़, केंद्रीय प्रतिनिधि सदानंद आम्बेकर, प्रांतीय सदस्य दयानंद समेले, सुरेंद्र प्रजापति और महेश चौधरी की टोली ने जन्मशताब्दी सहित कई विषयों पर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। डिजिटल क्रांति के माध्यम से पूज्य गुरुदेव के विचारों के प्रचार प्रसार की विधियाँ समझाई गईं।

यह कार्यशाला भोपाल में आयोजित होने जा रहे प्रांतीय युवा चिंतन शिविर के प्रयाज स्वरूप आयोजित की गई थी। ग्वालियर उपजोन प्रभारी दामोदर लवानिया ने प्रांतीय युवा चिंतन शिविर में प्रत्येक जिले के युवाओं की भागीदारी तथा दायित्वों के बारे में बताया।

पर्यावरण प्रेमी ख्यालीराम का सम्मान

वृक्षतीर्थ मेहरजा में आयोजित युवा उन्नयन कार्यशाला में ढ़सगाँव निवासी किसान ख्यालीराम सेजगायां को पर्यावरण संरक्षण में उनके विशेष योगदान के लिए मंचासीन गणमान्यों द्वारा सम्मानित किया गया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के पर्यावरण संरक्षण आंदोलन से प्रेरित होकर अपने स्वयं के व्यय से 50 सदस्यीय टीम द्वारा लगभग 50 हजार पौधे रोपे हैं।

ओंकारेश्वर उपजोन

वृक्षतीर्थ मेहरजा, खरगोन। मध्य प्रदेश
प्रांतीय युवा चेतना शिविर के प्रयाज स्वरूप वृक्षतीर्थ मेहरजा में ओंकारेश्वर उपझोन स्तरीय युवा उन्नयन कार्यशाला का आयोजन हुआ। इसमें खरगोन, खण्डवा, बुरहानपुर तथा बड़वानी जिलों के जिला समन्वयकों, तहसील समन्वयकों, गायत्री परिजनों ने भाग लिया। प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के प्रतिनिधि श्री राहुल सतूना ने इसे संबोधित करते हुए वर्तमान युग में युगशक्ति गायत्री के व्यापक विस्तार की आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की।

श्री राहुल सतूना ने कहा कि जो व्यक्ति गायत्री मंत्र को जपता है उसके अन्दर भावनाओं का परिष्कार होता है और लोक कल्याण की भावना जाग्रत् होती है।

प्रज्ञा अभियान पाक्षिक पत्र के जिला मीडिया प्रभारी श्री महेन्द्र सिंह पंवार ने बताया कि शिविर में उपस्थित लगभग 1000 से अधिक नैष्ठिक परिजनों को ओंकारेश्वर उपझोन समन्वयक पन्नालाल बिर्ला, युवा प्रकोष्ठ मध्य प्रदेश के प्रभारी विवेक चौधरी, डॉ. कौशल हरोडे तथा पं. मेवालाल पाटीदार ने भी संबोधित किया।

ओंकारेश्वर उपजोन की कार्यशाला को संबोधित राहुल सतूना

संभागीय युवा कार्यशाला

गुरुदेव के विचारों और सिद्धांतों को हर व्यक्ति तक पहुँचाने के संकल्प लिये

अम्बिकापुर। छत्तीसगढ़ : गायत्री परिवार अम्बिकापुर के द्वारा नगर के हरि मंगलम सभागार में जन्म शताब्दी संभागीय युवा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें सरगुजा संभाग के मनेंद्रगढ़, चिरमिरी, कोरिया, सूरजपुर, अंबिकापुर, बलरामपुर तथा जशपुर जिलों के 850 से भी अधिक युवा भाई-बहिन शामिल हुए। छत्तीसगढ़ राज्य युवा आयोग के अध्यक्ष श्री विश्व विजय प्रताप सिंह तोमर, लेज़र हॉस्पिटल के संचालक डॉ. योगेन्द्र सिंह गहरवार, नई दुनिया, सरगुजा के ब्यूरो चीफ अनंगपाल दीक्षित कार्यशाला के मुख्य अतिथि थे।

माननीय श्री विश्व विजय प्रताप सिंह तोमर ने शान्तिकुञ्ज द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों को विश्वव्यापी आंदोलन के प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार युवाओं में आध्यात्मिक विचारों को प्रवाहित कर उन्हें नैतिक मूल्यों के प्रति सजग बना रहा है।

लेज़र हॉस्पिटल के संचालक डॉ. योगेन्द्र सिंह गहरवार ने कहा कि गायत्री परिवार से जुड़ कर महिलाएँ न केवल संस्कारित जीवन जी रही हैं, बल्कि अगली पीढ़ी को संस्कारवान बनाने का संकल्प निभा रही हैं। श्री अनंगपाल दीक्षित ने नशे को हर परिवार के लिए बहुत बड़ा खतरा बताते हुए इसके विरुद्ध गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे अभियान की सराहना की।

युवा प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ के प्रांतीय संयोजक श्री ओमप्रकाश राठौर ने 'अभी नहीं, तो कभी नहीं' के भाव के साथ जन्म शताब्दी वर्ष में सामाजिक परिवर्तन के लिए सक्रिय हो जाने संबंधी प्रेरणा और मार्गदर्शन दिया।

कार्यक्रम के अंत में सभी ने पूज्य गुरुदेव के विचारों और सिद्धांतों को प्रत्येक गाँव के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने के संकल्प लिए।

श्रद्धा कौशल संवर्धन शिविर

बदायूं। उत्तर प्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ एवं आध्यात्मिक चेतना केन्द्र बदायूं में श्रद्धा कौशल संवर्धन शिविर आयोजित हुआ। इसमें यज्ञ कर्मकांड और साधना पद्धतियों का गहन अभ्यास करवाया गया। प्रातःकालीन सत्र में श्री रामचन्द्र प्रजापति ने योगासन, प्राणायाम और विभिन्न मुद्राओं का अभ्यास कराया तथा स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन और संतुलित जीवनशैली के महत्त्व को समझाया। गायत्री शक्तिपीठ बरेली के उपजोन समन्वयक श्री अजय वीर सिंह यादव और जिला समन्वयक नरेंद्र पाल शर्मा ने टोलियों के गठन और युवाओं के उत्तरदायित्वों से संबंधित मार्गदर्शन प्रदान किया। 7 सितम्बर को पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के माध्यम से शिविर का समापन हुआ। अनेक लोगों ने गुरुदीक्षा ली और बुराइयों की देव दक्षिणा यज्ञ भगवान को समर्पित की। शिविर के अंतिम सत्र में युवाओं को सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक करते हुए विदाई दी गई।

वनवासियों में आत्मपरिष्कार और समाज के उत्थान की प्रशंसनीय उमंग

जन्मशताब्दी साधना अनुष्ठान में ऋषि पंचमी पर 450 परिजनों ने 58 लाख 32 हजार गायत्री मंत्र जप किया

साली टांडा, बडवानी। मध्य प्रदेश
ऋषि पंचमी के पावन अवसर पर संत डेमनिया बाबा की कर्मस्थली गायत्री शक्तिपीठ सालीटांडा में हर वर्ष आयोजित होने वाला विराट वनवासी सम्मेलन इस वर्ष विशेष दो दिवसीय साधना अनुष्ठान के साथ सम्पन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी की जन्मशताब्दी के निमित्त गायत्री शक्तिपीठ सालीटांडा द्वारा यह विशेष अनुष्ठान सम्पन्न किया जा रहा है। इसके अंतर्गत अलग-अलग स्थानों पर सामूहिक साधना के विशाल कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

ऋषि पंचमी पर सालीटांडा में जन्मशताब्दी साधना अनुष्ठान का आठवाँ चरण सम्पन्न हुआ। इसमें बड़वानी जिले के वरला, पानसेमल, निवाली, पाटी, ठीकरी एवं सेंधवा तहसीलों के साथ खरगोन, खण्डवा एवं अलीराजपुर जिलों से आए 450 पंजीकृत गायत्री उपासकों ने 12 घंटे के अखण्ड जप में एक-एक घंटे की पारियों में भाग लेते हुए 58 लाख 32 हजार गायत्री महामंत्र का जप किया। उल्लेखनीय है कि जन्मशताब्दी साधना अनुष्ठान के अंतर्गत अब तक सम्पन्न हुए आठ चरणों में 4 करोड़ से अधिक गायत्री महामंत्र जप हो चुका है।

अखण्ड जप की एक घण्टे की पारी में जप करते वनवासी और संकल्प मशाल जनजागरण यात्रा की झाँकी

अनुष्ठान के 8 चरणों में चार करोड़ जप हुए

व्यसनमुक्ति संकल्प मशाल रैली

ऋषि पंचमी के दिन आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम के पहले दिन अखण्ड जप के पश्चात् सायंकाल संकल्प मशाल रैली आयोजित की गई। यह रैली गायत्री शक्तिपीठ में समाधि स्थल से आरंभ हुई, जिसने मादक पदार्थों का सेवन कर लक्ष्य से भटकते युवाओं को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने का संदेश दिया। रैली में 'व्यसन को भगाओ, अपना घर बचाओ' जैसे ओजस्वी नारे गूँजते रहे। सभी ने धधकती मशाल की प्रचण्ड अग्नि की साक्षी में नशा छोड़ने और समाजनिष्ठ बनने का संकल्प लिया।

दीपयज्ञ में बताया गायत्री का ज्ञान-विज्ञान

सायंकाल विराट दीपयज्ञ का आयोजन हुआ। शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री प्रमोद बार्चे, बलिराम यादव एवं दीपक बघेल के साथ सालीटांडा के राजेन्द्र डावर और विवेकानन्द की टोली ने इसे सम्पन्न कराया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने गायत्री उपासना-साधना को जीवन को सार्थक दिशा देने वाला ज्ञान-विज्ञान बताया। उनकी प्रेरणा से अगले दिन यज्ञ में 95 भाई-बहिनों ने गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली।

जिला समन्वयक श्री महेन्द्र भावसार ने जन्मशताब्दी वर्ष में युवाओं को सक्रियता की दिशाधारा संबंधी मार्गदर्शन दिया। श्री नरेंद्र डावर तथा रूपसिंग बाबा ने इसे आदिवासी भाषा में समझाया।

ऋषि पंचमी पर दीक्षा एवं यज्ञोपवीत परिवर्तन

ऋषि पंचमी के दिन गायत्री महायज्ञ के साथ यज्ञोपवीत परिवर्तन का परम्परागत कार्यक्रम बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। हजारों की संख्या में परिजनों एवं क्षेत्रवासियों ने इसमें भाग लिया। इस अवसर पर सभी ने मादक पदार्थों के सेवन का परित्याग करने और नियमित गायत्री उपासना करने का संकल्प दोहराया। 95 दीक्षा के अलावा बहुत बड़ी संख्या में विविध संस्कार हुए।

विशिष्ट गणमान्य

गायत्री महायज्ञ में अनुसूचित जनजाति आयोग के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अंतरसिंह आर्य की विशेष उपस्थित रही। उन्होंने समाज में व्याप्त बलि प्रथा एवं नशे जैसी कुरीतियों से बचते हुए सामाजिक उत्कर्ष संबंधी विचार व्यक्त किए। पुलिस अधीक्षक श्री जगदीश डावर ने व्यसनों से होने वाले घातक परिणामों और उसके कारण परिवार के लोगों की दुर्दशा का वर्णन करते हुए व्यसनमुक्त समाज के निर्माण का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साहित्य में जीवन का सार है, इसमें व्यक्ति निर्माण के सूत्रों का भण्डार है। श्री गजानंद डावर द्वारा अतिथि स्वागत एवं आभार अभिव्यक्ति के साथ साधना अनुष्ठान समारोह का समापन हुआ।

शिक्षक दिवस पर बच्चों के कौशल एवं संस्कारों ने मंत्रमुग्ध किया

जमालपुर। बिहार
गायत्री शक्तिपीठ, जमालपुर में संचालित कन्या/किशोर सह बाल संस्कारशाला निःशुल्क शिक्षण संस्थान में 5 सितम्बर 2025, शिक्षक दिवस के अवसर पर विशेष प्रेरणाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

व्यसन मुक्ति अभियान को गति देते हुए नन्हें बच्चों ने लघु नाटिका प्रस्तुत की, जिसे सभी ने खूब सराहा। बाल गायक हेमंत भगत ने डफली पर 'नशा न करना, मान लो कहना' गीत का गायन किया। दीपिका कुमारी एवं सुधांशु कुमार ने शिक्षक दिवस की महत्ता एवं डॉ. राधाकृष्णन की जीवनी पर प्रकाश डाला। रियांशी जयश्री ने युग निर्माण सत्संकल्प का पाठ करवाया। नयनिका सिंह ने अत्यंत मुग्धकारी वाणी में अयि गिरि नंदिनि (महिषासुरमर्दिनी स्तोत्र) का गायन किया। गोलू कुमार ने वंदना गीत प्रस्तुत किया। कशिश के द्वारा राष्ट्रकवि दिनकर की अभूतपूर्व कृति रश्मिरथी का भावपूर्ण वाचन किया गया। बच्चियों ने सुमधुर वाणी में घर घर अलख जगाएंगे गीत का गायन किया।

शिक्षक दिवस पर बाल संस्कारशाला के बच्चों की सांस्कृतिक प्रस्तुति

संस्कारशाला के संचालक ब्रह्मदेव मंडल ने बच्चों के कौशल और संस्कारों की सराहना की। कार्यक्रम के अंत में शक्तिपीठ के प्रधान ट्रस्टी श्री कृष्णचंद्र चौरसिया ने सभी प्रतिभागियों को प्रेरक युगसाहित्य भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक प्रशांत कुमार सिंह ने किया।

स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के संकल्प लिए

मुजगहन, धमतरी। छत्तीसगढ़
गायत्री प्रज्ञापीठ मुजगहन में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन अत्यंत हर्षोल्लास के साथ हुआ। ध्वजारोहण के उपरांत राष्ट्रगान का सामूहिक गायन हुआ। सभी ने मिल कर देश की एकता एवं अखण्डता का संकल्प लिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामवासी एवं माध्यमिक शाला के छात्र भी उपस्थित हुए।

जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग ने कहा कि अनेक वीरों के बलिदान के बाद हमने यह स्वतंत्रता पाई है, इसे संभाल कर रखना हमारा परम पुनीत कर्त्तव्य है। कार्यक्रम में सरपंच होमेश्वर साहू, अध्यक्ष भागवत सिन्हा, डॉ. पूनम साहू, पूर्व सरपंच राम दयाल साहू, माध्यमिक शाला, मुजगहन की प्रधान अध्यापिका श्रीमती गोदावरी गजेन्द्र एवं अनेक शिक्षक-शिक्षिकाएँ उपस्थित हुए।

गणेशोत्सव में विघ्नहर्ता गायत्री यज्ञ

साहित्य स्टॉल और सद्वाक्य भी लगाए

अणुशक्तिनगर, मुम्बई। महाराष्ट्र : मुम्बई में गायत्री परिवार का युवा संगठन 'दिया' पर्वों के प्रकाश में श्रद्धालुओं को प्रगतिशील विचारों से जोड़ने के लिए विविध कार्यक्रम चलाता रहा है। सार्वजनिक गणेशोत्सव पंडालों में सद्वाक्यों के बैनर लगाए जाते हैं, साहित्य स्टॉल लगाए जाते हैं तथा विघ्नहर्ता गायत्री यज्ञ एवं दीपयज्ञों की शृंखला चलाई जाती है।

इस वर्ष 30 अगस्त को अणुशक्तिनगर स्थित सार्वजनिक गणेशोत्सव में विघ्नहर्ता गायत्री यज्ञ एवं नवीन मित्र मंडल, मंडला, अणुशक्ति नगर में दीपयज्ञ का आयोजन किया गया। इनके माध्यम से समाज में सत्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करने और सामाजिक समरसता को बढ़ाने और नई पीढ़ी को आध्यात्मिक जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

दिया द्वारा संचालित बाल संस्कारशाला के बच्चों ने गणेश वंदना, गायत्री स्तुति, गायत्री चालीसा और सामाजिक उत्कर्ष के भाव जगाने वाले प्रज्ञागीत प्रस्तुत किये। विघ्नहर्ता गणेश जी पर केन्द्रित ध्यान साधना को सभी श्रद्धालुओं ने बहुत पसंद किया। साहित्य स्टॉल लगाया गया और श्रद्धालुओं में निःशुल्क साहित्य भी वितरित किया गया। यज्ञ में श्रद्धालुओं ने बुराईयाँ छोड़ने और सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने के संकल्प के साथ यज्ञाहुतियाँ अर्पित कीं।

विशाल सम्मेलन के साथ मनाया मातृस्मृति दिवस

भोपाल। मध्य प्रदेश
परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के महाप्रयाण दिवस, 7 सितम्बर पर गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में 'श्रद्धा स्मृति दिवस' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस आयोजन में 500 से अधिक बहिनों एवं भाईयों ने अत्यंत श्रद्धा व भक्तिभाव से परम वंदनीया माताजी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

कार्यक्रम में प्रस्तुत किए गए अत्यंत मार्मिक मातृ वंदनापरक प्रज्ञा गीतों एवं मनमोहक नृत्यों की प्रस्तुतियों ने सभी के अंतःस्थल को अश्रुपूरित श्रद्धा से भर दिया। बच्चियों ने 'दीप से मशाल की यात्रा' नामक लघु नाटिका का मंचन किया, जिसने सभी श्रोताओं के हृदय को गहराई तक प्रभावित किया।

महिला प्रकोष्ठ की संयोजिका श्रीमती मधु श्रीवास्तव ने माताजी के जीवन मूल्यों को रेखांकित करते हुए कहा कि माताजी ने चार दशकों से अधिक समय तक महिला शिक्षा, संस्कार निर्माण और समाज सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित किया। आज उनकी प्रेरणा से महिलाएँ अपने अधिकार, कर्त्तव्य और सामर्थ्य को पहचानकर समाज को नई दिशा दे रही हैं।

मातृस्मृति दिवस की कार्यक्रम प्रस्तोता बहिनें एवं दर्शकगण

कार्यक्रम के अंत में दीपयज्ञ के माध्यम से वंदनीया माताजी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर सभी ने समाज कल्याण व महिला सशक्तीकरण का सामूहिक संकल्प लिया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र की अनेक महिला चिकित्सकों एवं समाज सेविकाओं ने भी भाग लिया।

भा.सं.ज्ञा.प. पुरस्कार वितरण समारोह

मंदसौर। मध्य प्रदेश : गायत्री शक्तिपीठ, मंदसौर में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में वरीयता प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत करने हेतु सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस आयोजन में तहसील, जिला एवं विद्यालय स्तर पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले 225 छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र, नगद पुरस्कार एवं पूज्य गुरुदेव द्वारा लिखित साहित्य प्रदान करके सम्मानित किया गया।

मध्य प्रदेश जोन प्रभारी श्री राजेश पटेल, उज्जैन के उप जोन प्रभारी श्री प्रभाकर सोनोने, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ. श्री वीरेन्द्र पांडेय के साथ मंदसौर के वरिष्ठ पत्रकार श्री घनश्याम बटवाल एवं श्री हरिशंकर शर्मा पुरस्कार वितरण समारोह में विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने बच्चों को भारतीय संस्कृति के गौरव की गाथाएँ सुनाते हुए इसे विश्व संस्कृति बनाने में अहम भूमिका निभाने का आह्वान किया।

जिला समन्वयक श्री मोहनलाल जोशी सहित कई विद्यालयों के अध्यापकगण, छात्रों के अभिभावक एवं गायत्री परिवार के कार्यकर्त्तागण की उपस्थिति में यह पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ।

शरीर और कीर्ति दोनों नाशवान हैं और मृत्यु भी सदा निकट रहती है, इस कारण धर्म संग्रह करना उचित है। - चाणक्य

रूस में जन्मशताब्दी जनजागरण समारोह

दिव्य ज्योति कलश यात्रा एवं 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

यज्ञ से पूर्व निकाली गई भव्य ज्योति कलश यात्रा

मॉस्को : रूस की राजधानी मॉस्को के एथनो पार्क में दिनांक 24 अगस्त को जन्मशताब्दी ज्योति कलश यात्रा निकाली गई और 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ। यज्ञ में 150 से अधिक रशियन परिजनों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज से पहुँची डॉ. ज्ञानेश्वर मिश्र, श्री हेमलाल तत्त्वदर्शी एवं श्री प्रज्ञेश्वर दास की टोली ने सम्पन्न कराया।

ज्योति कलश यात्रा में रशियन श्रद्धालुओं ने अत्यंत भावविभोर होकर उल्लसित हृदय के साथ पावन ज्योति कलश को अपने शीश पर धारण किया। यज्ञ के अवसर पर 'एक तुम्हीं आधार सद्गुरु' एवं 'गायत्री के महामंत्र से' जैसे प्रज्ञा गीत रशियन भाषा में गाए गए। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने गायत्री मंत्र, देव पूजन, संगतिकरण एवं यज्ञ के ज्ञान-विज्ञान पर अत्यंत प्रेरणाप्रद उद्बोधन दिये।

महायज्ञ में 15 लोगों ने गायत्री मंत्र दीक्षा ली। दीक्षा संस्कार से पूर्व शान्तिकुञ्ज परिजनों ने गुरु तत्व के महत्त्व एवं दीक्षा के नियमों को अत्यंत प्रभावशाली शब्दों में समझाया गया।

शान्तिकुञ्ज में बनाई गई थी जन्मशताब्दी के कार्यक्रमों की योजना

इस 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन परम पूज्य गुरुदेव के प्रति अनन्य भाव से समर्पित रशियन मूल के परिजनों ने किया था। इनमें से एक 15 सदस्यीय दल विगत फरवरी माह में नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र में भाग लेने शान्तिकुञ्ज आया था। उन्होंने शान्तिकुञ्ज में आयोजित हुए जन्मशताब्दी ज्योति कलश सम्मेलन में भाग लिया और उस अवसर पर शान्तिकुञ्ज में निकाली गई ज्योति कलश यात्रा में भी शामिल हुए। वे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के उद्बोधन और उनके द्वारा किए गए देश-विदेश में ज्योति कलश यात्राओं के आह्वान से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने ज्योति कलश यात्रा के साथ अपने देश में परम पूज्य गुरुदेव के विचारों का व्यापक विस्तार करने का संकल्प लिया और तीन मुख्य स्थानों पर 24-24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ करवाने की अनुमति माँगी। मॉस्को के एथनो पार्क में आयोजित उसकी संकल्प के अंतर्गत सम्पन्न हुआ।

इन दिनों शान्तिकुञ्ज की टोली लगभग 3 माह की रूस की प्रव्रज्या पर है। जन्मशताब्दी जनजागरण अभियान के अंतर्गत लगभग प्रतिदिन जनसंपर्क का क्रम चल रहा है, विविध यज्ञ-संस्कारादि कार्यक्रम हो रहे हैं।

लम्बी साइकिल यात्राएँ कर लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक कर रही है पिता-पुत्री की जोड़ी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार की छात्रा 19 वर्षीया उमंग पंत, बी. एससी. योग विज्ञान, द्वितीय वर्ष और उनके पिता, होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. उमेश चंद्र पंत की जोड़ी इन दिनों साथ-साथ साइकिल यात्रा कर समाज में स्वास्थ्य जागरूकता का संदेश दे रही है। हाल ही में पिता-पुत्री की यह जोड़ी ने दिल्ली-उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड के बीच 501 किलोमीटर की साइकिल यात्रा पूरी की। उनके देव संस्कृति विश्वविद्यालय आगमन पर प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उनकी सराहना करते हुए उद्देश्य की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ दीं।

उमंग और उनके पिता होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. उमेश चंद्र पंत अपनी साइकिल यात्राओं के माध्यम से लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के अभियान में जुटे हैं। अपने साथ कदम से कदम मिलाकर समाज को एक सार्थक संदेश दे रही बेटी के प्रति उनकी आवाज में गर्व और आंखों में सपने लिए एक ही संदेश गूंजता है। ''**साइकिल सिर्फ एक सवारी नहीं, यह जीवन को सेहत, खुशी और जोश से भर देने वाला अमृत है।**' वे अपनी यात्राओं में लोगों के साथ स्वास्थ्य लाभ के लिए योग, प्राणायाम और होम्योपैथिक चिकित्सा के सरल उपाय और अपने अनुभव साझा करते हैं। लेकिन इससे भी बढ़कर है लोगों के साथ मिलते हुए उनकी मुस्कान, उम्मीद और अपनापन। वे सबसे ऐसे मिलते हैं जैसे हर व्यक्ति उनका अपना हो।

गाजियाबाद के वसुंधरा सेक्टर-5 में रहने वाली पिता-पुत्री की इस जोड़ी ने 11 जुलाई को दिल्ली-एनसीआर से अपनी यात्रा आरंभ की थी। वहाँ से शान्तिकुञ्ज और वापसी की 501 किलोमीटर की यात्रा में उन्होंने हजारों लोगों को स्वस्थ जीवन के लिए छोटी यात्राओं के लिए साइकिल का उपयोग करने की प्रेरणा दी। इससे पूर्व इस जोड़ी ने फरवरी 2025 में प्रयागराज महाकुंभ में 1400 किलोमीटर की साइकिल यात्रा कर लाखों लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया था।

धन्य धन्य छत्तीसगढ़

मध्य प्रदेश और राजस्थान के बाद अब छत्तीसगढ़ में भी पाक्षिक प्रज्ञा अभियान को सुनिश्चित लक्ष्य के साथ जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है। प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री ओमप्रकाश राठौर एवं श्री चंपेश्वर साहू जी के विशेष प्रयास तथा शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री शुकदेव निर्मलकर एवं जोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा के मार्गदर्शन में प्रत्येक जिले में पाक्षिक का सदस्यता अभियान चल रहा है। दुर्ग (1765), बालोद (1655), रायपुर (996), जशपुर (742) और राजनांदगाँव (655) ऐसे जिले हैं, जिन्होंने 500 सदस्य का प्रथम लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। गरियाबंद, बलौदाबाजार, बिलासपुर, महासमुंद, सरगुजा जिले भी इस लक्ष्य के बहुत करीब पहुँच रहे हैं।

स्वदेशी अपनाओ, देश को आत्मनिर्भर और व्यसनमुक्त बनाओ

दिव्य ज्योति कलश की विदाई

भोपाल। मध्य प्रदेश

भोपाल जिले में पूरे अगस्त माह में भ्रमण करने के उपरांत प्रज्ञापीठ बरखेड़ा में आयोजित समारोह के साथ उसे बैतूल जिले के लिए विदाई दी गई। इस अवसर पर मध्य जोन समन्वयक श्री राजेश पटेल ने ज्योति कलश रथ यात्रा के लिए समय देने वाले श्री पुंडरीनाथ देशमुख, धर्मेश झाड़े, रामाराम बोडखे और वाहन चालक श्री शर्मा जी को मंत्र दुपट्टा ओढ़ा कर सम्मान किया। उन्होंने कहा कि यह दिव्य ज्योति कलश यात्रा लोगों को जन्मशताब्दी का संदेश जन-जन तक पहुँचाने के साथ संस्कार युक्त एवं व्यसन मुक्त समाज बनाने तथा स्वदेशी अपनाने की प्रेरणा दे रही है। उन्होंने इसके माध्यम से संगठन का विस्तार एवं मंडलों का गठन करने की प्रेरणा भी कार्यकर्त्ताओं को दी। इस अवसर पर श्री रामचंद्र गायकवाड़, अशोक सक्सेना, श्याम शर्मा, विनोद गुप्ता, सी.एल. चोरसे, शिवनारायण राजपूत, कमल वर्मा, सुरेश श्रीवास्तव एवं गायत्री परिजन उपस्थित थे।

30 घरों में गायत्री यज्ञ कराया

31 अगस्त, रविवार को भोपाल के राजीव नगर अयोध्या बायपास क्षेत्र में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के अंतर्गत 30 घरों में यज्ञ सम्पन्न किया गया। यज्ञ से पूर्व सभी यज्ञाचार्यो ने सबसे कॉलोनी की परिक्रमा करते हुए क्रान्ति गीत एवं हम बदलेंगे, युग बदलेगा जैसे नारों के उद्घोष के साथ लोगों को स्वदेशी अपनाने, देश को आत्मनिर्भर और व्यसनमुक्त बनाने का संदेश दिया। उनके द्वारा लोगों को मिट्टी के गणेश जी की स्थापना करने एवं घर में ही विसर्जन करने तथा दिवाली पर गाय के गोबर एवं मिट्टी के स्वदेशी दीपकों का प्रयोग करने का आह्वान किया गया।

जन्मशताब्दी समारोह के लिए महिला मण्डल ने लिया ₹21 लाख के अनुदान का संकल्प

उज्जैन। मध्य प्रदेश

मातृशक्ति जन्मशताब्दी वर्ष में गायत्री परिजनों की भूमिका के विषय में आत्ममंथन करने हेतु शक्तिपीठ में एक दिवसीय सक्रिय कार्यकर्त्ता कार्यशाला का आयोजन हुआ। इसमें लगभग 125 भाई-बहिनों ने भाग लिया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री रामचन्द्र जी गायकवाड़ एवं श्री रुद्र गिरी गोस्वामी ने इसे संबाधित किया। सभी परिजनों ने संकल्प पत्रक भर कर समयदान एवं अंशदान के उच्चस्तरीय संकल्प लिए।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की उपज़ोन समन्वयक श्रीमती उर्मिला तोमर के नेतृत्व में सक्रिय बहिनों की टोली ने जन्मशताब्दी वर्ष के आयोजनों हेतु इक्कीस लाख रुपये एकत्रित करके शान्तिकुञ्ज भेजने का संकल्प लिया। यह अनुदान मुट्ठी फण्ड की रीतिनीति से एकत्रित किया जायेगा। श्रीमती उर्मिला तोमर ने बताया कि इसके लिए 1000 परिवारों में ज्ञानघट की स्थापना की जा रही है। नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं ने ₹200 रुपये प्रतिमाह का अनुदान देने का संकल्प लिया है।

उपजोन में 24 हजार घरों में देव स्थापना का संकल्प

कुरुद, धमतरी। छत्तीसगढ़

कुरुद के मंगल भवन में रायपुर उपजोन के पाँचों जिले-रायपुर, धमतरी, गरियाबंद, महासमुंद एवं बलौदा बाजार के कार्यकर्त्ताओं की एक महत्त्वपूर्ण गोष्ठी छत्तीसगढ़ ज़ोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री शुकदेव निर्मलकर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी में 300 से अधिक सक्रिय कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ ज़ोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा ने सभी को वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में श्रद्धांजलि स्वरूप 24,000 नवीन घरों में देवस्थापना कराने, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में और अधिक विद्यार्थियों को शामिल करने, युग निर्माण सत्संकल्प के पाठ को

कुरुद में आयोजित हुई पाँच जिलों के कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी

विद्यालयों एवं ग्राम पंचायतों से जोड़ने एवं नशा मुक्ति जागरूकता अभियानों में पूर्ण शक्ति एवं कर्मठता के साथ जुड़ने के संकल्प करवाए।

उपजोन समन्वयक श्री सी.पी. साहू, संगठन प्रभारी श्री एम.एल. साहू एवं जिला महिला प्रमुख श्री खिलेश्वरी किरण ने मार्गदर्शक बिन्दु प्रस्तुत किये। पाँचों जिलों के समन्वयकों ने अपने जिले की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

गोष्ठी की कुछ अन्य विशिष्ट बातें

बाढ़ पीड़ितों की सहायता : गायत्री परिवार, धमतरी की ओर से बस्तर में आई भीषण बाढ़ की चपेट में आए पीड़ितों के लिए 43,745 की सहयोग राशि भेजी गई।

कार्यकर्त्ता सम्मान : कुरुद ब्लॉक के 12 वरिष्ठ परिजनों को गायत्री मंत्र उत्तरीय एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति एवं 40 बहिनों का पुंसवन संस्कार

फिंगेश्वर, राजिम। छत्तीसगढ़

दिनांक 20 अगस्त को पाँच कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ फिंगेश्वर के साथ आसपास के गाँव बोरिद, सरकड़ा, बिरोड़ा, जामगाँव, सेंदर, भेन्डी, परसदा कला, पतोरा, गनियारी, बिनौरी, भसेरा आदि की 40 बहिनों का पुंसवन संस्कार कराया गया। इस अवसर पर 40 दिवसीय सवा लाख गायत्री मंत्र जप अनुष्ठान करने वाले साधकों ने अपने अनुष्ठान की पूर्णाहुति भी की।

कार्यक्रम का संचालन गायत्री शक्तिपीठ राजिम की बहिनों की टोली ने किया। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में हमारे समाज में 16 संस्कारों की परंपरा थी, तब महापुरुष जन्म लिया करते थे। परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने उस संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित किया है।

इस कार्यक्रम को सम्पन्न कराने और सफल बनाने में आंगनबाड़ी के कार्यकर्त्ताओं का विशेष योगदान रहा।

वास्तविक धर्म यह है कि जिस बात को मनुष्य अपने लिये उचित नहीं समझता, दूसरों के साथ भी वैसी बात हरगिज न करे। - भीष्म पितामह

देसंविवि व गायत्री विद्यापीठ में मनाया गया शिक्षक दिवस

सार्थक शिक्षा वह है जो विद्यार्थियों के चरित्र और चिंतन में उत्कृष्टता का समावेश करे।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज में भारतरत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्म दिवस-शिक्षक दिवस अत्यंत श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया गया। दोनों शिक्षण संस्थानों में सांस्कृतिक व शैक्षणिक कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा व गुरु के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया।

देसंविवि के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अपने संदेश में डॉ. राधाकृष्णन जी के साथ परम पूज्य गुरुदेव जैसे इतिहास में अब तक के सफलतम राष्ट्र निर्माता शिक्षकों को बड़ी कृतज्ञता के साथ याद किया। उन्होंने कहा कि सार्थक शिक्षा वह है जो चरित्र और चिंतन में उत्कृष्टता का समावेश कर विद्यार्थियों को महानता के पथ पर अग्रसर करे। हम परम पूज्य गुरुदेव के जीवनादर्शों पर चलते हुए सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध और सम्पन्न भारतवर्ष के निर्माण के लिए नई पीढ़ी तैयार कर रहे हैं।

शिक्षक दिवस पर गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत करते देवंविवि के विद्यार्थी

प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने शिक्षकों को समाज को दिशा देने वाले दीपस्तंभ बताया। उन्होंने कहा कि सच्चा शिक्षक वही है जो स्वयं निरंतर सीखता रहे और अपने ज्ञान से विद्यार्थियों को प्रेरित करता रहे। इस दृष्टि से डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का व्यक्तित्व हम सबके लिए आदर्श है।

गायत्री विद्यापीठ में व्यवस्था मंडल प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के साथ-साथ संस्कार और विवेक का निर्माण है। पाठ्यक्रम के साथ-साथ उत्तम साहित्य का अध्ययन विद्यार्थियों को आत्मिक रूप से समृद्ध करता है।

अखण्ड ज्योति एवं परम वंदनीया माताजी के जन्म का शताब्दी वर्ष-2026

भारत सरकार के अति विशिष्ट महानुभावों से विचार विनिमय और आमंत्रण

डॉ. चिन्मय जी श्री अमित शाह जी, नड्डा जी, अभिषेक सिंह जी और सुश्री के. नंदिनी सिंगला को उपहार देते हुए

परिवर्तन के इन महान क्षणों में परम पूज्य गुरुदेव के विचार एवं उनके जीवन दर्शन को वैश्विक स्तर पर पहुँचाकर देव संस्कृति की पताका फहरा रहे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 11 सितम्बर को नई दिल्ली पहुँचे, देश के अनेक शीर्ष नेताओं से मिले और उन्हें गायत्री परिवार की वर्तमान सक्रियता एवं उपलब्धियों की जानकारी दी। अखण्ड दीप के प्राकट्य और परम वंदनीया माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की दृष्टि से यह मुलाकात बहुत ही महत्त्वपूर्ण थीं।

माननीय गृहमंत्री जी से मुलाकात

प्रथम मुलाकात केन्द्रीय गृहमंत्री माननीय श्री अमित शाह जी से हुई। उन्हें जन्मशताब्दी महोत्सव 2026 के लिए विशेष आमंत्रण दिया। माननीय गृहमंत्री जी ने विश्वास व्यक्त किया कि यह समारोह समाज और राष्ट्र को नई प्रेरणा और ऊर्जा देगा।

16 सितंबर को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित होने जा रहे अंतर्राष्ट्रीय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सम्मेलन की जानकारी भी उन्हें दी। इस सम्मेलन में देश-विदेश के अनेक ख्यातिप्राप्त एआई विशेषज्ञ एवं शोधकर्ता सहभागिता करेंगे।

श्री शाह ने गायत्री परिवार द्वारा सनातन संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और वैश्विक प्रसार हेतु किए जा रहे विविध प्रयासों की हृदय से सराहना की।

माननीय नड्डा जी से मिले

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी एवं उनके परिवार से भेंट की। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री माननीय श्री नड्डा जी ने परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी महोत्सव के लिए अपनी शुभकामनाएँ देते हुए इसे समाज में आध्यात्मिक चेतना के जागरण, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राष्ट्रहित में योगदान का अद्वितीय अवसर बताया।

एनआईसी के महानिदेशक को आमंत्रण

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भारत सरकार के इंडिया AI मिशन के सीईओ एवं इलेक्ट्रॉनिक्स, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के महानिदेशक एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव श्री अभिषेक सिंह जी से शिष्टाचार भेंट की। उन्हें 16 सितंबर 2025 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सम्मेलन में आमंत्रित किया। दोनों के मध्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं अध्यात्म के समन्वय से उभरने वाले संभावित आयामों पर सार्थक चर्चा हुई। श्री अभिषेक सिंह जी ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे भारतीय ज्ञान-धरोहर एवं आधुनिक विज्ञान के संगम का अनूठा अवसर बताया।

आई.सी.सी.आर. नई दिल्ली में विचार-विमर्श

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) के मुख्यालय, नई दिल्ली में परिषद के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विस्तार से विचार-विमर्श किया। इस वार्ता में परिषद की महानिदेशक सुश्री के. नंदिनी सिंगला, उप महानिदेशक श्री अभय कुमार, उप महानिदेशक श्रीमती मनीषा स्वामी, निदेशक श्री संजय वेदी तथा उपमहानिदेशक श्री एस. गोपालकृष्णन उपस्थित रहे।

बैठक के दौरान भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार, शिक्षा एवं योग को अंतरराष्ट्रीय मंचों तक पहुँचाने, साथ ही युवाओं के बीच भारतीय मूल्य एवं परंपराओं के प्रसार जैसे विषयों पर गहन विमर्श हुआ। सहमति बनी कि भारत की सांस्कृतिक धरोहर को विश्व पटल पर और सशक्त रूप में स्थापित करने हेतु देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं आई.सी.सी.आर. विभिन्न क्षेत्रों में एक-दूसरे के सहयोगी बनकर कार्य करेंगे।

कन्या किशोर कौशल प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

ओडिशा के 20 जिलों के कार्यकर्त्ताओं ने लिया प्रशिक्षण

"नारी की भूमिका केवल एक परिवार चलाने तक सीमित नहीं, अपितु पूरे समाज के निर्माण में है।"
-श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी

शान्तिकुञ्ज में दिनांक 1 से 5 सितम्बर तक की तिथियों में ओडिशा प्रांत के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं हेतु पाँच दिवसीय कन्या-किशोर कौशल प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में ओडिशा के 20 जिलों से आए 200 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

महिला मंडल, शान्तिकुञ्ज की समन्वयक आदरणीया श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी एवं ओडिशा ज़ोन प्रभारी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर शिविर का शुभारम्भ किया। आदरणीया शेफाली जी ने अपने संबोधन में कहा कि नारी ममता, त्याग व सहानुभूति की प्रतिमूर्ति है। समाज में नारी की भूमिका केवल एक परिवार चलाने तक सीमित नहीं, अपितु पूरे समाज का निर्माण करने की है। हमारी

आद. शेफाली पण्ड्या जी प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते हुए

भूमिका कन्याओं को प्रशिक्षित कर उनमें निहित नारी के इसी आदर्श रूप को साकार करने की है।

पाँच दिवसीय शिविर में कुल 22 सत्र हुए। इनमें अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। वर्तमान समय में कन्या-किशोर कौशल शिविरों की आवश्यकता, शिविर की कक्षाओं को और अधिक प्रायोगिक एवं रोचक कैसे बनाएँ, विद्यार्थियों के लिए युगनिर्माण सत्संकल्प का महत्त्व, किशोरावस्था की समस्याएँ एवं समाधान, बच्चों के व्यक्तित्व विकास में संस्कारों का महत्त्व, किशोरावस्था में जीवन शैली कैसी हो, भारतीय संस्कृति का महत्त्व, शक्तिवान बनें, अभिभावकों के उत्तरदायित्व, मित्र बनाएँ पर सोच समझकर इत्यादि विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा व्यावहारिक व सैद्धांतिक मार्गदर्शन प्रदान किया गया। प्रत्येक सत्र के पश्चात् प्रश्नोत्तरी का क्रम भी रहा।

राष्ट्र रक्षा आपदा प्रबंधन शिविर शृंखला

सुल्तानपुर और बाराबंकी जनपद के कार्यकर्त्ताओं ने लिया प्रशिक्षण

पीड़ितों की सेवा मानवता का धर्म है। गायत्री परिवार ऐसे सेवाकार्यों में सदैव अग्रणी रहा है। स्थानीय एवं राष्ट्रीय आपदाओं के समय गायत्री परिवार ने बड़ी भूमिका निभाई है। हाल ही में उत्तरकाशी व चमोली जनपद में आई विपदा में शान्तिकुञ्ज ने भरपूर सहयोग किया है।

गायत्री परिवार पूरे देश में आपदाग्रस्तों की सेवा-सहायता में तत्पर रहे, इस हेतु समय-समय पर शान्तिकुञ्ज में प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन कर आपदा प्रबंधन वाहिनियाँ तैयार की जाती रही हैं। ऐसा ही एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण सत्र 6,7 और 8 सितम्बर की तिथियों में शान्तिकुञ्ज में सम्पन्न हुआ। इस शिविर में सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश) से आए 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया। उन्हें पुलिस व सेना के उच्चाधिकारियों सहित आपदा प्रबंधन से उच्च प्रशिक्षित लोगों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

तीन दिन चले शिविर में आपदा की विभिन्न अवस्थाएँ, प्राथमिक चिकित्सा के आवश्यक नियम एवं तकनीक, राहत एवं बचाव कार्यों में स्वयंसेवकों की भूमिका, आग एवं विस्फोटक से निपटने के उपाय, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता का विकास, मॉकड्रिल, पायनियरिंग,

सुल्तानपुर के कार्यकर्त्ताओं को अग्निशमन उपकरणों की जानकारी देते पूर्व नौसेना अधिकारी श्री इंद्रजीत सिंह जी

गाँठें एवं बंधन संबंधी व्यावहारिक प्रशिक्षण दिये गये।

शिविर के समापन सत्र को संबोधित करते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि आज देश को ऐसे युवाओं की आवश्यकता है, जो संकट के समय संबल बन सकें। व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र जी गिरि ने युवाओं को देश के सजग, समर्थ और सेवाभावी नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया।

शिविर समन्वयक श्री मंगल सिंह गढ़वाल ने प्रतिभागियों को आपदा प्रबंधन कार्यों के अपने अनुभवों से लाभान्वित किया। डॉ. गिरीश गुप्ता, श्री अजय त्रिपाठी, श्री इंद्रजीत सिंह आदि ने भी अलग-अलग सत्रों में प्रशिक्षण दिया।

बाराबंकी के परिजनों के लिए

ऐसा ही एक राष्ट्ररक्षा आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण शिविर शान्तिकुञ्ज में 13 सितम्बर को आयोजित हुआ, जिसमें बाराबंकी, उत्तर प्रदेश से आए परिजनों ने भाग लिया।

केन्द्रीय टोली पुनर्बोध प्रशिक्षण शिविर

शान्तिकुञ्ज में 12 से 16 सितंबर 2025 तक केंद्रीय टोली पुनर्बोध प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। यह शिविर आगामी शारदीय कार्यक्रम शृंखला में आयोजित होने वाले केन्द्रीय कार्यक्रमों के संचालन हेतु शान्तिकुञ्ज से टोलियों में जाने वाले टोली नायक, सहायक, संगीतज्ञ, चालक आदि के प्रशिक्षण के लिए आयोजित किया गया। शान्तिकुञ्ज तथा देश भर से आए टोली नायक स्तर के कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया।

जन्मशताब्दी वर्ष के विराट आयोजनों को ध्यान में रखते हुए यह शिविर विशेष था। शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने इसमें इस वर्ष के कार्यक्रमों की विषयवस्तु, पूज्य गुरुदेव-माताजी की आकांक्षाओं के अनुरूप देव संस्कृति के व्यापक विस्तार की योजनाओं आदि की जानकारी दी।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपने विशिष्ट उद्बोधन को संबोधित करते हुए जन्मशताब्दी वर्ष की वर्तमान वेला को मानवता के सौभाग्य का काल बताया। उन्होंने इन दिनों गायत्री परिवार द्वारा देश-दुनिया में विचार क्रान्ति के लिए की जा रही निःस्वार्थ सेवाओं के लिए अपने परिजनों की पीठ थपथपाई। उन्होंने कहा कि यह समय स्वयं को बदलकर अपने भाग्य और भविष्य को बदलने का जो सुनहरा अवसर लेकर आया है, उससे हर व्यक्ति को लाभान्वित होने का अवसर मिले, यही हमारा लक्ष्य है। श्रद्धेया शैल जीजी ने व्यक्तिगत मुलाकात कर सबका उत्साहवर्धन किया।

बुद्धिमान वह है जो किसी की गलतियों से होने वाली हानि को देखकर अपनी गलतियाँ सुधार लेता है।

प.वं. माताजी को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

जगन्माता परम वंदनीया माताजी लोकमंगल की भावनाओं के रूप में हम सब के बीच विद्यमान हैं। -श्रद्धेय प्रणव पण्ड्या जी

अपने अलौकिक स्नेह-संरक्षण से करोड़ों लोगों में पारिवारिक आत्मीयता का संचार कर भारतीय संस्कृति के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव को चरितार्थ करने वाली, समाज में नारी की सनातन गौरव गरिमा को पुनः प्रतिष्ठित करने वाली स्नेह सलिला परम वंदनीया माताजी के 31वें महाप्रयाण दिवस पर शान्तिकुञ्ज परिवार ने उन्हें दो दिवसीय कार्यक्रमों के साथ भावभरी श्रद्धाञ्जलि दी।

शान्तिकुञ्ज में 6 और 7 सितंबर को अखण्ड जप, सांस्कृतिक कार्यक्रम, दीपयज्ञ और शोभायात्रा जैसे कार्यक्रमों के साथ परम वंदनीया माताजी से जुड़े मार्मिक प्रसंगों और प्रेरणाओं का स्मरण किया गया। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं आदरणीया शेफाली जी ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम श्रृंखला का शुभारंभ किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम : सायंकाल सांस्कृतिक संध्या 'एक शाम परम वंदनीया माता जी के नाम' से शान्तिकुञ्ज के महिला मण्डल ने मातृ वंदना, मातृ स्तुति एवं माता जी के जीवन पर आधारित लघु नाटिका की हृदयस्पर्शी प्रस्तुति की। देव संस्कृति विश्वविद्यालय की छात्राओं ने भाव नृत्य के माध्यम से माताजी को नमन किया। महिला मंडल के वाद्यवृंद में उनके कौशल और मिशन के प्रति समर्पण की झाँकी थी। बहिनों की इस शानदार प्रस्तुति के लिए महिला मण्डल की समन्वयक सुश्री दीना त्रिवेदी और व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि ने बहिनों की सराहना की और शुभकामनाएँ दीं।

जनजागरण रैली : 7 सितम्बर को प्रातः महिला जागरण रैली निकाली गई, शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय का पूरा वातावरण शंख, घंटे, घड़ियाल और युग निर्माणी जयघोषों की गगनभेदी ध्वनि से गूँज उठा। हर ओर नारी जागरण तथा संस्कृति के उत्थान का संदेश ही सुनाई देता रहा। चैतन्य सिद्ध क्षेत्र में पहुँचकर रैली का समापन सभी के द्वारा की गई सामूहिक प्रार्थना के साथ हुआ, जिसके साथ उपस्थित जनसमुदाय ने माताजी के दिखाए मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा ली।

भावोद्गार : प्रातःकालीन सभा में आदरणीया श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी ने माताजी के महान व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि माताजी का सम्पूर्ण जीवन जीव मात्र के कल्याण के लिए समर्पित रहा। उन्होंने नारियों के सांस्कृतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक उत्थान के लिए आजीवन कार्य किया, लाखों बहिनों के भीतर छिपी संभावनाओं को जगाया।

7 सितम्बर के दोपहरकालीन सत्र में शान्तिकुञ्ज की वरिष्ठ बहिनों ने माताजी से जुड़े अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए उनके संरक्षण-अनुदानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की, जिन्हें सुनकर श्रोतागण भावविभोर हो गए।

दीपयज्ञ : सायंकालीन सभा में ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली ने गायत्री दीपमहायज्ञ सम्पन्न कराया। विराट देव परिवार के विश्वव्यापी विस्तार की प्रेरणाएँ उकेरी गईं। अपने जीवन-दीप से हर व्यक्ति और समाज को प्रकाशित करने की भावनाएँ जगाई गईं। अपने पुरुषार्थ से जग को जगमगाते हुए, परम वंदनीया माताजी को उनके जन्मशताब्दी वर्ष में सार्थक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के संकल्प लिए गए।

श्रद्धेय का संदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैलदीदी ने परम वंदनीया माताजी के वात्सल्य, त्याग और गुरुदेव के प्रति अथाह समर्पण को याद किया। श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने कहा कि अपने अलौकिक वात्सल्य और दिव्य संरक्षण से करोड़ों लोगों को नवजीवन प्रदान करने वाली जगन्माता थीं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी। वे लोकमंगल की भावनाओं और स्नेह-संवेदनाओं के रूप में हम सबके बीच विद्यमान हैं।

शान्तिकुञ्ज के सत्संग भवन में आयोजित श्रद्धाञ्जलि समारोह में बहिनों की नाट्य प्रस्तुति और दर्शकों का उत्साह

स्वाध्याय संदोह श्रद्धा संवर्धन सत्र

7 से 10 सितंबर की तिथियों में स्वाध्याय संदोह श्रद्धा संवर्धन सत्र का आयोजन हुआ। इस सत्र में शान्तिकुञ्ज द्वारा कई वर्षों से चलाये जा रहे ऑनलाइन स्वाध्याय से जुड़े स्वाध्याय प्रेमियों ने प्रमुख रूप से भाग लिया। सत्र में जन्मशताब्दी वर्ष से संबंधित चुनी हुई पुस्तकों पर प्रमुख रूप से विचार मंथन किया गया, डॉ. चिन्मय जी का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।।

चि. निखिल शर्मा को मिला राष्ट्रपति पुरस्कार

शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्ता श्री भूपेन्द्र शर्मा के सुपुत्र श्री निखिल शर्मा (गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज के पूर्व छात्र) को 31 अगस्त को भारत स्काउट गाइड के सर्वोच्च पुरस्कार-राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें नई दिल्ली स्थित भारत मण्डपम् में आयोजित एक कार्यक्रम में दिया गया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, गायत्री विद्यापीठ की अध्यक्षा आदरणीया शेफाली जी सहित शान्तिकुञ्ज एवं गायत्री विद्यापीठ परिवार ने चि. निखिल को उसकी विशिष्ट उपलब्धि के लिए हृदय से शुभाशीष दिये और उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

विश्व की समस्याओं का समाधान भारत से निकलेगा। - डॉ. चिन्मय जी

शिक्षा, शोध और अध्यात्म मानव जीवन के लिए आवश्यक : महामहोपाध्याय भद्रेशदास स्वामी

राष्ट्रीय संगोष्ठी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज में वैश्विक समस्याएँ, सनातन समाधान विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। बीएपीएस स्वामीनारायण शोध संस्थान के अध्यक्ष महामहोपाध्याय भद्रेशदास स्वामी, देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी जी, देसंविवि के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, उत्तराखंड संस्कृत विवि के कुलपति प्रो. दिनेशचन्द्र शास्त्री जी, शोभित विवि के कुलाधिपति कुंवर शेखर विजेन्द्र ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर संगोष्ठी का शुभारंभ किया।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भारत वह भूमि है जहाँ वसुधैव कुटुम्बकम् एवं सर्वे भवन्तु सुखिनः जैसे सार्वभौमिक कल्याण के विचार विकसित हुए। उन्होंने विभिन्न ऐतिहासिक और दार्शनिक उद्धरणों के माध्यम से स्पष्ट किया कि आज जिस प्रकार विश्व अनेक जटिल समस्याओं से जूझ रहा है, उनके समाधान भारत की सनातन परंपरा में अध्यात्म और समग्र जीवनदर्शन के रूप में विद्यमान हैं।

मुख्य अतिथि महामहोपाध्याय भद्रेशदास स्वामी ने कहा कि शिक्षा, शोध और अध्यात्म मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं और ये तीनों जहाँ भी एक साथ विद्यमान होते हैं, वह स्थान स्वतः ही उन्नत भूमि में परिवर्तित हो जाता है। भारतीय परंपरा में निहित ज्ञान-विज्ञान और चिंतन आज की वैश्विक चुनौतियों से निपटने की पूरी सामर्थ्य रखता है।

आद. डॉ. चिन्मय जी महामहोपाध्याय भद्रेशदास जी को सत्संकल्प भेंट करते हुए

20 से अधिक विश्वविद्यालयों के 142 शोधार्थियों ने शोध पत्र पढ़े

राष्ट्रीय संगोष्ठी में दिन भर हुए विचार मंथन में 142 रिचर्स पेपर पढ़े गये, जिनमें कहा गया कि विश्व के समक्ष जो भी समस्याएं हैं, चाहे वह मानसिक तनाव हो, पारिवारिक विघटन या पर्यावरणीय संकट, उनका समाधान सनातन धर्म की शिक्षाओं में स्पष्ट रूप से उपलब्ध है।

उत्तराखंड संस्कृत विवि के कुलपति प्रो. दिनेशचन्द्र शास्त्री ने पर्यावरणीय संकट, नैतिक पतन और सामाजिक विषमता जैसी चुनौतियों के समाधान के लिए देसंविवि की इस पहल की सराहना की और इसे राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक प्रभावशाली प्रयास बताया।

इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों का भावभरा सम्मान किया गया। कई पत्र-पत्रिकाओं का विमोचन हुआ। शिक्षा सचिव डॉ. सचिन चमोली, शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि, कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन, देसंविवि के संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, शिक्षक-शिक्षिकाओं सहित 20 से अधिक विश्वविद्यालयों के शोधार्थी एवं स्थानीय नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

वैश्विक शांतिदूत माननीय अब्दुल्ला अल मन्नई का शान्तिकुञ्ज आगमन

शान्तिकुञ्ज द्वारा विश्वशान्ति, सहगमन और सांस्कृतिक सहयोग के लिए किये जा रहे प्रयासों की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि

बहरीन स्थित द किंग हमद ग्लोबल सेंटर फॉर पीसफुल को-एग्ज़िस्टेंस के कार्यकारी निदेशक अब्दुल्ला अल मन्नई जी का दिनांक 3 सितम्बर को शान्तिकुञ्ज एवं देसंविवि में आगमन हुआ। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उनका अत्यंत भावपूर्ण स्वागत किया। उनका आगमन आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के नेतृत्व में शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा विश्व में शान्ति, सहगमन और सांस्कृतिक सहयोग के लिए किए जा रहे अथक प्रयासों की सफलता की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती है।

अब्दुल्ला अल मन्नई जी ने शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षणिक, आध्यात्मिक और सामाजिक प्रकल्पों एवं गतिविधियों का अध्ययन करते हुए कहा कि ये संस्थाएँ सारी दुनिया के लिए मानवता की प्रेरणा स्रोत हैं, जो युवाओं को अच्छे विचार और संस्कार दे रही हैं।

देसंविवि के विद्यार्थियों से संवाद व उन्नयन में भागीदारी

अब्दुल्ला अल मन्नई जी ने विश्वविद्यालय के कई विद्यार्थियों से संवाद किया। उन्होंने देसंविवि के छात्रों को भारत ही नहीं, बल्कि भविष्य के वैश्विक नेता बताया, जो विश्व में शांति, सहअस्तित्व और सहयोग के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान देंगे। माननीय अब्दुल्ला अल मन्नई जी ने देसंविवि में आयोजित नवप्रवेशी विद्यार्थियों के स्वागत समारोह 'उन्नयन' में भाग लिया। इस कार्यक्रम में माननीय प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भारत और बहरीन के कूटनीतिक संबंधों के साथ सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंधों की गहराइयों का अहसास भी कराया। उन्होंने बहरीन स्थित लगभग 220 वर्ष पुराने अंतरधार्मिक सौहार्द्र के प्रतीक श्रीनाथजी मंदिर का उल्लेख किया, जिसके संरक्षण में श्री अब्दुल्ला अल मन्नई जी का भी सराहनीय योगदान रहा है।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 27.09.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26